१५

ज्ञानपीठ लोकोदय-ग्रन्थमाला—हिन्दी ग्रन्थाङ्क—६४

लेखनी-बेला

तथा

अन्य कृतियाँ

वीरेन्द्र मिश्र



भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

ज्ञानपीठ लोकोदय-ग्रन्थमाला-सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन एम० ए०

प्रकाशक
मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी



प्रथम संस्करण
जनवरी १९५८ ई०
मूल्य तीन रुपये



मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

यह सृजन

'लेखनी-बेला' में अपनी कविताओंके सम्बन्धमें स्वयम् कोई वक्तव्य मैं नहीं दे रहा हूँ। पिछले सग्रह 'गीतम' (१९५३) में भी मैं इससे बचा था। भविष्यमें यदि आवश्यक समझूँगा तो सविस्तार कुछ कहूँगा। और तभी रचनामूलक मेरे दृष्टिकोण, मान्यताएँ, तथा मन्तव्य हिन्दी काव्य और काव्यकारसे सम्बद्ध भूमियोंपर उजागर हो सकेंगे।

'गीतम' के पश्चात् लिखित मेरी छोटी-बड़ी सत्तावन रचनाओं के इस प्रतीक्षित नये गीत-सग्रहमें प्रेमी पाठकों और श्रोताओंको पूर्व परिचय का आकर्षण मिलेगा।

मैंने यहाँ कुछ उन कविताओंको भी स्थान दिया है जो गीतम कालके पहलेकी हैं पर महत्त्वपूर्ण हैं। 'मसूरी' एक ऐसी ही ध्वनि रचना है, जिसे मैंने रगावलोकन तथा दृश्य प्रभावकी एक ही कलम से उक्त प्रकृति-केन्द्र घूमते समय ज्यों-का-त्यों रेखांकित कर लिया था।

'देश' भी है इसमें, जिसका व्यापक रूप से स्वागत हो चुका है। देशकी संस्कृति और शान्तिकी पृष्ठ-भूमिपर इतिहास, भूगोल और राजनीतिकी नामावली प्रणालीमें सर्वदा लिखित रचनाओंसे भिन्न है यह संगीतमयी कृति। कला और सांस्कृतिकताके उपेक्षित तत्त्वों का इसमें आलोकन हुआ है।

इस सग्रह में अत्यन्त छोटे गीत भी हैं जिन्हें अपने विशेष छन्दों में लिखा गया है। कुछ अन्य गीत हैं जिनमें विभिन्न जीवनानुभूतियाँ अपनी तरह से अभिव्यक्त हुई हैं। विगत सग्रहकी ही भाँति इस

संकलनमें भी मृत्यु, निराशा तथा रीतिकालीन शृङ्गार-गन्धसे मुक्त गीतों द्वारा नये वातावरणका प्रभाव निवेदित हुआ है।

भारतके सांस्कृतिक प्रतिनिधि-मण्डलके एक सदस्यके नाते अपनी नेपाल-यात्राके समय विमानका अपना यात्रानुभव हिन्दीके वर्तमान काव्य धरातलके प्रतीक रूपमें मुक्त छन्द के 'वायुयान में' सहज भावसे व्यक्त करनेका प्रयत्न किया है।

विविध रूप विधानके इस संग्रहमें कृतित्वकी मनोवाञ्छित अभिव्यक्ति मुझे अधूरी ही लगती है। शब्द-स्वर द्वारा अभी अनकहे हिमालयकी कितनी अनवरत अभिव्यंजना होनी है। फिर भी यदि इन रचनाओंमें मुझे कहीं कोई सफलता मिली हो तो उसे पाठक और समीक्षक अग्रसर कर सकते हैं। उन्हें मेरा अग्रिम धन्यवाद !

आग्रे का बाज़ार
लश्कर (ग्वालियर)

वीरेन्द्र मिश्र

रचना-क्रम



लेखनी-बेला

१

शब्द-स्वर वाले दुराहे पर
देख तो रे, जुड रहा मेला
धीन पर है गीत का जादू
लेखनी में गूँजती बेला

कल्पना के कण्ठ में सरगम
भैरवी में भावना का क्रम

दो डगर हैं एक मंजिल की
धार दो हैं, एक है संगम

दर्द को शहनाइयों में सुन
गीत की गहराइयों में बुन

मन निराशा से नहीं बहला
पास तो आसावरी के जा

तू कहेगा कौन दावे से
लौट आ पिछले भुलावे से

गीत है सागर अगर संगीत मन्थन है
व्यक्ति का अभिव्यक्ति में अद्भुत विसर्जन है

गद्य वाले राज-पथ पर तू
व्यर्थ जाकर हाथ मत फैला



गूँज पर छाया तिमिर कैसा
व्योम है तम के शिविर जैसा

जब अमित-शक्ति सृजेता भी
काम सम्भव है न फिर ऐसा

जब कि ज्वाला शान्त होगी कल
यह सदी दृष्टान्त होगी कल

यह कि कविता की ध्वजाओं को
आह से फूटी ऋचाओं को

लोग कुछ करते उजागर थे
धूल में भी फूल के स्वर थे

ज्ञान या विज्ञान के तूफान के आगे
थे नहीं सब लोग भेड़ों की तरह भागे

गीत की रस-रागिनी सुनकर
थम गया था अश्रु का रेला



छन्द रे, स्वच्छन्द होकर गा
मत कहीं भी बन्द होकर गा

माँस से सींचे बगीचे में
फूल-सा खिल, गन्ध होकर गा

गन्ध लेकिन गूँजती भी हो
धूल जिसको पूजती भी हो

बन स्वयम् मन्दिर निवेदन का
हो नहीं बन्धन विशेषण का

अश्रु ही दीवार हो उसमें
स्वप्न चन्दनवार हो उसमें

धूप से थक लेखनी जो छाँह में उतरी
थाम ले तू आज उसकी पीर की गठरी

ज़िन्दगी के चन्दनी तन का
चाँदनी आँचल हुआ मैला



२

तू सिसकती शाम सा गमगीन है
आ तुझे खिलती किरन तक ले चलूँ
गीत के रूपम गगन तक ले चलूँ

स्वप्न तेरे उड गये आकाश में
तू पुना तो आँसुओं के हार से
तैरता मन कूल वाली प्यास में
क्या उसे फिर द्वीप के त्यौहार से

तू अ-पूजित मूर्ति-सा चुपचाप है
आ तुझे मुखरित सपन तक ले चलूँ
साफ-सुथरे आचरण तक ले चलूँ



देखते हम आ रहे हर कन गरम
रेत के हर ब्वेन रेगिस्तान का
एक हिरनी, एक तृष्णा, एक भ्रम,
प्रश्न फिर है ही नहा मधुपान का

गन्ध तू भटकी हुई वीरान में
आ तुझे तेरे पवन तक ले चलूँ
एक सिन्दूरी चमन तक ले चलूँ



हर दिशा में भागनेवाली हवा !
देख, सूनी है मलय की पालकी
जुड रही है सर्द साँसों की सभा
और त्यौरी है बदलती काल की

जो कि तेरे ही दुखो से है दुखी
चल उसी भीगे नयन तक ले चलूँ
चॉद को जाते चरण तक ले चलें

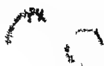


जगमगा तू चॉदनी की सेज पर
मै रहूँ तो द्वार का स्वरकार ही
मजिलों के मन्दिरों मे मेजकर
मै रहूँ तो सिर्फ बन्दनवार ही

मूक राधा की निरुत्तर बॉसुरी
चल तुझे सगीत-क्षण तक ले चलूँ
रूप-मन को गीत-मन तक ले चलें



तेरसनी-वेला



३

मिले हो, तो, कहो कुछ तुम, कहें कुछ हम, सुने जीवन
बहुत दिन बाद फिर सुनने-सुनाने का हुआ है मन

न जाने तुम कहाँ किस पन्थ से चलकर यहाँ आए
कहीं पर भोर की होगी कि जो ढलकर यहाँ आए
ज़रा बोलो किरन-स्वर से, धुँधलके के कटें बन्धन
न रूठे तुम, मगर फिर भी मनाने का हुआ है मन

●

जवानी की सियासत-से, यहाँ तुम मौन बैठे हो
हृदय रह-रह यही कहता, न जाने कौन बैठे हो
कहीं तुम भी जगत की भाँति, बदले तो नहीं इस क्षण
न हम-तुम मिल सकें यों भी, ज़माने का हुआ है मन

●

कहोगे तुम कि क्यों सन्देह की यह कल्पना की है
रुआसी साध ने मेरी, तुम्हारी साधना की है
बहुत है आँसुओं का मोल, मेरी साँस का क्रन्दन
इसी से फिर तुम्हें अपना बनाने का हुआ है मन

●

अधर की प्यास झूली है, सलौनी याद के झूले
कहो सघर्ष की गाथा, कहाँ भटके, कहाँ भूले
ज़रा अब मुस्कराओ भी, खिले मधुऋतु, बहे सावन
वसन्ती चाँदनी में झूम जाने का हुआ है मन

●

न जो गाया गया, वह गीत गाने का हुआ है मन
मिले हो तो, कहो कुछ तुम, कहें कुछ हम, सुने जीवन

●

४

मिल गये हो मददगार हम-उम्र तुम
लग रहा है चमकता सितारा मुझे
स्वार्थी विश्व में है किसे क्या पता
प्यार कितना मिला है तुम्हारा मुझे

मै अमर गीत जब गुनगुनाता रहा
पारखी एक श्रोता मिला ही नहा
थे मटकने रहे डालियों पर बहुत
धूल म फूल कोई खिला ही नहा

गीत की आरती का समय हो गया
तब तुम्हीं ने नयन भर निहारा मुझे
ताज का सगमरमर हिला देखकर
प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे

•

जब निशा का प्रथम ही प्रहर था लगा
ज़िन्दगी का दिया टिमटिमाने लगा
आँसुओं की झडी, आँधियों का तिमिर
काल शतरज अपनी बिछाने लगा

तब तुम्हीं नेह लेकर प्रकाशित हुए
चाहिये और क्या था सहारा मुझे
रूप कितने खडे आज पढ़ता रहे
प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे

•

भूल पाए न तुमको बिछुड कर, मगर
भूल बैठे तुम्हें भी कि जब आ मिले
ये हमारी तुम्हारी कशिश खूब है
तुम हमें जब मिले, गीत से जा मिले

और सच तो यही, हो विरह या मिलन
प्रेरणा बन तुम्हींने पुकारा मुझे
तुम हमें दिख रहे, हम तुम्हें लिख रहे
प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे



रोशनी दे रहे चाँद-सूरज, मगर
दर्द दिल का नहीं वे घटा पा रहे
एक तुम प्राण के दीप हो मनचले
साथ मेरे खुशी से जले जा रहे

यह जलन है मधुर, यह तपन है बहुत
जन्म लेना पडेगा दुबारा मुझे
उम्र में प्यार का कर्ज चुकना कठिन
प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे



मेघ का राज है, खूब अन्धेर है
चिमनियों के धुएँ में छुपे हैं सपन
और आओ निकट, मत डरो आग से
है प्रलय-काल, फिर भी बढाओ चरण

एक पतवार तुम, एक पतवार मैं
ले चलो नाव, दिखता किनारा मुझे
तीर पर जो खडे हँस रहे, देख लें
प्यार कितना मिला है तुम्हारा मुझे



५

आज मुझसे कहा गीत ने
मन किसी रूपका जीतने
मौज से हार जा

आँख तूफ़ान की अनछुई
चाँदनी है नहाई - धुली
आज मुझसे कहा रूप ने
छाँव दी शीतल धूप ने
ज़िन्दगी वार जा



सिर्फ़ तू ही नहा है दुखी
पी रही पीर चन्दा-मुखी
आज मुझसे कहा प्राण ने
स्वप्न के भेद को जानने
अश्रु के द्वार जा



स्वप्न के माथ पर है शिकन
इस किनारे थकन ही थकन
आज मुझसे कहा प्यार ने
धार में उठ रहे ज्वार ने
तू नदी-पार जा



पिछली मधुऋतु ने पी ली थी साँसों की सुरमई सुराही
चलते अब ये झुलसे अमलतास-से नयन प्राण के राही
कोई पीर नदी बन जाए अँखिया नीर परसने को
तो उमड़ें-घुमड़ें गीतों के मेघ-मल्हार बरसने को



पगडण्डी वैसी ही टेढ़ी, लेकिन वह सूनी-सूनी है
या तो वह मरुथल की दासी, या वह साधू की धूनी है
कोई भीगी हुई साँवरी नागिन आए डसने को
तन तो सम्भव है आ जाए विष पर सुधा बरसने को



अम्बर के ऊँचे मचान से कजरी गा, बदरी कजरारी!
चुल्लू में ही पी लेंगे हम, ढोल जरा क्वाँरी पनिहारी!
मन हरियाए जामुन चूनर, घूँघट उठा दरसने को
मेरे गीत बड़े आकुल हैं तेरे साथ बरसने को



अमराई कर रही प्रतीक्षा, सावन का हमराही आए
चातक कहाँ टहटहा जाए, कोयल कहाँ रिमझिमा जाए
कुछ दिन को मिल जाय नगरिया इन्द्र-धनुष की, बसने को
युग-युग मन रे रंगममी, माती रंग बरसने को



७

तुम्हारे प्यार की दहली बुलाती है मुझे
इसी से मैं तुम्हारे द्वार जाया करता हूँ

सयानी रात करती बात मेरे चाँद से
मुझे लगता कि कोई रात रानी खिल रही
सपन मेरा जुड़ा जाता तुम्हारी आँख से
मुझे लगता कि है कोई कहानी चल रही

तुम्हारी प्यास तो पागल बनाती है मुझे
इसी से मैं समन्दर साथ लाया करता हूँ



ज़रा-सी जिन्दगानी है, बहुत-से दर्द हैं
मगर आकाशने दुखड़ा सुनाया है किसे
सलौने हैं कि जो अरमान मेरे, सर्द हैं
मगर उनसे कहो मैंने सताया है किसे

तुम्हारी पीर वीणा-सी लुभाती है मुझे
इसीसे मैं तुम्हें दुखड़ा सुनाया करता हूँ



निमन्त्रण-सा कहाँ से आ रहा सन्देश है
मगर वह चुप नहीं, उसमें बड़ी आवाज़ है
सवेरे की हवा है, और सादा वेश है
तुम्हारा साज़ बजता है, तुम्हें भी नाज़ है

तुम्हारी रागिनी लगती प्रभाती है मुझे
इसी से मैं हमेशा गुनगुनाया करता हूँ

८

आँसू बिल्कुल ही सो जाएँ
सपने अपने में खो जाएँ
तुम इतनी रोशनी न फेंको
मेरे नयन बन्द हो जाएँ

माटी का बनगई दिया यह धूल नेह से गीली होकर
छूकर इसे धन्य कंचन भी, शप न कुछ भी इसको खोकर
सूरज-चाँद इसे दुलराते
अन्धड़ आ-आ कर फिर जाते

मिट्टी के घर दिया गीत का सदा जला है गाते-गाते

कृति-आकृति सब कुछ लुट जाए
प्राणों का मेला उठ जाए
तुम इतना आकाश न छाओ
धरा-क्षितिज सब कुछ मिट जाए



भूली-भटकी बहुत ज़िन्दगी, आखिर कुछ पा जाने को ही
गायक आया, बीन छेड़ता, आखिर कुछ गा जाने को ही
मिले मुस्कराहट मंज़िल की
इसीलिए तो हूँ मैं पंथी

अर्थ-हीन मुसकानें होता उसमें, तो क्या मुझसे बनती

हर पत्थर बादल हो जाए
घर का घर पागल हो जाए
तुम इतना उल्लास न बाँधो
सुख से दुख बोझिल हो जाए

मुझको चलने देना है तो प्यार करो, मंजिल बन जाओ
वैसे ही तूफान बहुत है, पथ में तुम आँधी मत लाओ
निरखो तो परखो भी मन को
मेरे मधुमासी सावन को
आँसू से मत साफ करो तुम मेरे गीतो के दर्पण को
गीत जवानी में ढल जाए
काल समय पाकर छल जाए
तुम इतना सन्ताप न साधो
जिसमें अगला कल जल जाए



जन्मे हुए गीत-गुञ्जन पर वासन्ती फूलो की टोली
चित्र-लिखित विस्मय-विमुग्ध है, इस पर क्या नीलामी बोली
यह मेरा सगीत सलौना
है बच्चो का नहीं खिलौना
इस पर चल पाएगा कैसे स्वर्ण-रजत का जादू टोना
यामा मिटे प्रात हो जाए
सब कुछ स्वर्ण-सात हो जाए
तुम इतना मधुमास न व्यापो
पाटल पारिजात हो जाए



६

जाते-जाते मुड़-मुड़ कर मत देखो तुम
बादल का गंगाजल ढुल-ढुल जाएगा

इस अस्फुट अकलुष अश्रु के मोती को
दृग-मग पर तुम्हीं लुटाने आये थे
किसी हर्षवर्धन की तपसी साधों की
क्या तुम हमको याद दिलाने आये थे

लुटते-लुटते हमको भी मत लूटो तुम
पागल-सा पाहन-दिल गल-गल जाएगा



आज निदा-बरखा भी धूमिल घड़ियों में
अमराई का सूना झूला हिलता है
दृग से काजल, पग से पायल, रूठ रहे
पर कोई रूठे भी तो क्या मिलता है

खिलते-खिलते प्राणों पर मत खेलो तुम
पाटल-दृग में सपना घुल-घुल जाएगा



मेंहदी-लगी-हथेली-जुड़ी कलाई की
धड़कन को मत सुनो निगाहें गीली हैं
श्याम घटाओं के अनचीन्हें प्यालों से
सर्द हवा ने भीगी सुधियाँ पी ली हैं

पंछी बन कर उड़-उड़ कर मत देखो तुम
घायल-सा स्नेहांचल खुल-खुल जाएगा

हम गीतों के इन्द्रधनुष है, शर हो तुम
जगल में मगल-सी रजनीगन्धा हो
पर उसकी हरियाली रोकोगे कैसे
जो सब कुछ हो पर सावनका अन्धा हो

अगर निरखना हो तो नभ को निरखो तुम
शबनम से मलयानिल धुल-धुल जाएगा



१०

जा रहा हूँ, नहीं भूलना,
याद करना कि जब भूलना,
प्यार की डाल पर

आज रोती हुई आँख है
और भीगी हुई पाँख है
कल उजाली छिटेगी निशा,
जगमगाने लगेगी दिशा,
चाँद के भाल पर



पीर है, तुम सहो, मै सहूँ
क्या कहूँ, और मै क्या कहूँ ?
देख-सुन राह चलना ज़रा,
घाटियों में सम्हलना ज़रा,
ख़ास कर ढाल पर



अब तलक कब पता था चला
उम्र से उम्र का फ़ासला
जा रहा मै अकेला कहा,
धूल कोई हटेगा नहीं,
उड रहे बाल पर



११

दूरी और निकटता का अद्भुत विस्तार हुआ जाता है
इतनी दूर रहा न करो तुम जीवन भार हुआ जाता है

गिनती की साँसें है उनपर भी सभार नहा कुछ कम है
अनहोनी बातें हैं जिनका दुर्व्यवहार नहीं कुछ कम है
तिस पर तिल-सा एकाकी हर निमिष पहाड़ हुआ जाता है



नाव-हीन पतझर आ-आ कर बसा रहा वीरान नगरिया
भाग रहे पंछी उड-उडकर, शेष हुए घरबार अटरिया
देर न लगती मधुवन का मधुवन मिस्मार हुआ जाता है



तुम भी कुछ-कुछ खोए होगे, बारम्बार कहो न कहो तुम
चुपके-चुपके रोए होगे, बन जलधार बहो न बहो तुम
तट जिसको समझे था माझी, वह मझधार हुआ जाता है



दुनियाँ का बाजार भरा है, हँसते आँसू, रोते सपने
नदिया-नाले-पर्वत के उस पार शिविर हैं अपने-अपने
मेरी प्यासी पलकों को दर्शन दुश्वार हुआ जाता है



कल तक जो चुप्पी साधे था, प्रिय-नियोग का गीत रुआसा
मेरे पास चला आया है लेकर जाने क्या-क्या आशा
बचना बहुत कठिन है उससे, जो गद्दार हुआ जाता है

देखो तो, घिरती आती है भोर-गगन मे काली छाया
बत्तियों के दीप-शिखर पर, शलभ बनी कंचन-सी काया
अपने हास-रुदन पर अब युगका अधिकार हुआ जाता है



१२

तेरे हर आँसू से बोझिल है मन मेरा
फागुन की आँखों में सावन भर आया है

किरनों की ओस किस नेहा में डूबी है
मुझको तो वासन्ती अम्बर भी भावनी
कोई यह कहता है दुखड़ा यह कम होगा
लिख-लिख कर गा-गाकर सुधियों की लावनी

उजड़ी सी बस्ती है, जंगल है मन मेरा
ऐसे में रोता तू मेरे घर आया है



साँसों की राधाएँ, धड़कन के मनमोहन
खेले हैं तेरी उस मस्ती की छाँव में
तूने जो मेरे सन्तापों को दे दी थी
सूरज-सा आया था, चन्दा के गाँव में

तन से ही डाली पर पाटल है मन मेरा
तेरा दुख उसमें अब शबनम धर आया है



इतना मत रोना रे, इतना मत दुख देना
रुक जाए दूरी पर, सपनों की पालकी
पानी में तेरी जो किरनों की इन्द्रेनी
दासी बन जाए वह अँधियारे काल की

वैसे ही युग-युग से घायल है मन मेरा
चिन्ता का पाहुन क्यों माथे पर आया है

१३

तुम मेरे गीतों के द्वारे आओ ना आओ
दरद भरे मनकी आकुलता को तो आने दो

तुम मुझसे अनजान मगर दुख तो अनजान नहीं
उससे तो हो चुकी बहुत पहले पहचान कहीं
रूठा रहे वह किसी नयन में, है वह मेरा
कैसे कह दूं उसको होगा मेरा ध्यान नहीं

तुम अपनी शरबती निगाहें करलो बन्द भले
आँखों से बह रही सरलता को तो आने दो

•

जिस बाँसुरिया के प्यासे दिन-रात अधर मेरे
उसी डगर से साँवरिया तक जाते स्वर मेरे
मन का गान-निवेदन सुननेवाले श्रोता ओ
उसी एक वशी का जादू होता घर मेरे

तुम अपने निर्विघ्न मौन मे पल-पल सुखी रहो
बेचारी सगीत बहुलता को तो आने दो

•

मैं धडकन का प्यासा मुझको भाता घोष नहा
लेकिन मुझको किसी शोर पर रोष नहीं
किस पर्वत की कौन शिला तुम पता न भक्तों
पूजन भी है नशा कि जिसमें रहता होश नहीं

तुम पाषाणी मूर्ति बने मन्दिर को धन्य करो
पर मुझ तक अपनी दुर्बलता को तो आने दो

•

१४

मेरे नयन की उदासी तुम्हें ज्ञात है
रूठे अगर तुम सपन तिलमिला जॉयगे
मेरी खुशी पर दुखी मेघ घिर ऑयगे
मैं कह रहा हूँ कि तुम मुस्कराओ जरा

पूनम-अमावस मिली रात की राह पर तुम दिया जगमगाए
चूनर गुलाबी नज़र की उड़ा कर रुआँसे क्षणों को भुलाए

जीवन-नदी पर है आज, बरसात है
हारे स्वर से स्वर म समा जायँगे
मन के पड़ोसी-विदेशी न घर आयँगे
मैं कह रहा हूँ कि तुम जगमगाओ ज़रा

•

यह जो उड़े जा रहे खग सुबह-शाम, यह जो उड़ी जा रही धू
यह सब तुम्हें देख कर ही रहा है कि मरुथल बना अश्रु का फू

मन की अँधेरी-उजेरी किये साथ है
भूले अगर तुम, नयन डबडबा जायँगे
बीते कथा-गीत भर-भर उभर आयँगे
मैं कह रहा हूँ कि तुम गुनगुनाओ ज़रा

•

ढूँढी बहारें गगन में, जलधि में, कहा कुछ मिला ही नहीं माण
जब से तुम्हें है निहारा, पुकारा, दुलारा, मिली गन्ध वीरान

तुम पर निछावर सदा फूल है, पात है
शबनम रुलाकर सुमन फिर कहाँ जायँगे
सौरभ-सँदेसे हवा में बिखर आयँगे
मैं कह रहा हूँ कि तुम झूम जाओ ज़रा

सच पूछते हो अगर, तो सुनो, एक ऐसी लहर है उठाना हमें
हम-तुम भले डूब जाएँ मगर धार से उठ पुकारे जमाना हमें

तुमसे छिपी अनकही कौन-सी बात है
जिस दिन प्रणय के विहग सो न जायेंगे
उस दिन निमिष ज़िन्दगी के अमर जायेंगे
फिर कह रहा हूँ कि तुम मुस्कराओ ज़रा



१५

खडा उम्र की दहली पर मैं सोचता–
एक फूल तेरी वेणी मे गूँथकर
जीवन मे कब ला पाया मधुमास मैं
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि दिन बारह मास मे

सदा रहा तुझको बिलखाता हँसते हुए जहान म
तुझे साथ ले गया दूर तक मैं आँधी-तूफान में
जितनी सिन्दूरी साधें थी धरती से आकाश तक
एक-एक कर सब कुम्हलाई, धूल हुई वीरान में

आज स्वयं मैं अपने से ही पूछता—
एक पीर अगणित पीरों में पूछकर
कितना तुझको दे पाया उल्लास में
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास में



कभी सोचता था कि करूँगा होड गगन के चाँद से
बाधूँगा मलयानिल तेरी साँसो के उन्माद से
रेशम के परिधानो मे दुल्हन नाचेगी झूमकर
मै युग-युग तक प्यार करूगा, नई नवेली साध से

और आज मै आँख फाडकर देखता—
पास पडा अमृत का प्याला छोडकर
विप पीने का करता हूँ अभ्यास मैं
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मे



प्राणों से प्यारे अरमानो पर मैने वारा तुझे
तुझे प्यार कर भी रचना की दुनिया मे हारा तुझ
फिर भी जीत मिली है जो, तेरे आगे कुछ भी नहीं
गीत और तू दोनो मेरे, और न कुछ प्यारा मुझे

मैं खुशियों का राजसिंहासन छोड़ता—
एक गीत अगणित साँसों से जोड़कर
भोगे जाता हूँ आर्थिक वनवास में
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मैं



साध रँगी गेरू से तूने, चला झुलसते पथ पर
गाँव-नगर-नदिया-पर्वत के समारम्भ पर, अन्त पर
दरस-परस केवल पीड़ा का, नहीं मिला सुख का तुझे
बैरिन हुई दिवाली-होली, खिलते हुए वसन्त पर
आँख भरे बादल नभ में है डोलता
एक बूँद तेरे आँसू की चूमकर
सावन से कब रँग पाया आकाश मैं
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मैं



सारी बरबादी के पीछे भव्य सृजन की प्यास है
मिट्टी राख हुई तो क्या अब भी जीवित विश्वास है
तेरे स्वर में दृष्टि, दृष्टि में गीत, रूप में माधुरी
और चला चल, आने वाला कल स्मारक-इतिहास है
जीवन-नदी किनारे मरा चीखता
एक बार तेरी धड़कन पर झूमकर
जीवित कर दूँगा श्मशानी लाश मैं
फिर तो चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मैं



१६

आज मानस मुझे है मिली,
और पूनम तुझे है फली
किस पहर तक मुझे ?

सर्जना को मिटाता प्रलय
बीतता जा रहा है समय
गॉव मेरे लिए धूल है,
और तेरे लिए फूल है,
किस नगर तक मगर ?

•

नीर में पीर की गन्ध है
मौन का कब नयन बन्द है
नाव मुझको निरख झूमती,
और तुझको लिये घूमती,
किस लहर तक मगर ?

•

अब नहा सो रहे भू-गगन
सुन रहे है हमारे कथन
एक में ऑसुओं का वजन,
और तू स्वप्नवाही नयन,
किस नज़र तक मगर ?

•

१७

पीता हुआ अँधेरा बढ़ता जाता हूँ
मैं पर्वत पर पर्वत चढ़ता जाता हूँ
जला गीत के दिये
मीत के लिये
चाँद, तू नेह चाँदनी ढाल रे!

मैं तीरथ को निकल पड़ा हूँ राह पर
मन की धूप खिली है तन की छाँह पर
चुपके-चुपके पूज रहा हूँ प्रेरणा
मिलन छोड़ आया हूँ बिछुड़ी बाँह पर
सावन पर तो बहुत लगाये आशा हूँ
पर यह कहना कठिन कि कितना प्यासा हूँ
भरी घटा की नदी,
लहर से लदी,
तीर पर है मछुए का जाल रे !



गुज़र चुकी है धूप सुबह की, शाम की
थमी हुई हलचल जीवन-संग्राम की
समय मिला चिन्तन, सुख-दुख-इतिहास का
रोएँ-गाएँ मज़ा अपने राम की
चला सफर में, दिया जला तो पवन हिला
निहार जुगनू उड़ा, शलभ की तरह मिला
उसे रोशनी मिली,
ध्वजा-सी खुली
नाव पर उड़ा सलौना पाल रे !

तुझे पता क्या मन के हाहाकार का
गीत नहीं है कुछ किसी के प्यार का
मरते-खपते जीवन का परिणाम ये
स्वाद कभी मिल सका नहीं त्योहार का
यह दीपक है, इसको जलते जाना है
मैं पंथी हूँ, मुझको चलने जाना है
प्रगट जहाँ मंज़िलें,
सम्हल कर चलें
वहा पर कहाँ छुपा है काल रे!



१८

बढ़ा दिया है पाँव आज मैंने अलबेली राह पर
गिरने लगूँ, बाँह दे देना
बुझने लगूँ, स्नेह दे देना
थकने लगूँ, छाँह दे देना

विष का चाँद नहीं चाहा तो नयनों मे भी प्यार न उमड़ा
रही चाँदनी फीकी-फीकी सपनों का ससार न उमड़ा
रूठी मुझसे रजनीगन्धा औ' नाराज़ हुई शफाली
लेकिन मुझको रही पल्लवती मधर्पित मावस की डाली

मज़िल परेशान है मेरी उठती हुई निगाह पर

गिरने लगूँ, बाँह दे देना
बुझने लगूँ, स्नेह दे देना
थकने लगूँ, छाँह दे देना



जो जीने को ही जीते हैं, उनके लिए समस्या हूँ मे
जो विष पीने को जीते है, उनके लिए तपस्या हूँ मैं
जो श्रम म तटस्थ चुप रहते, उनकी दृष्टि अर्द्ध-अन्धी है
जो न रहे हर भीड़-भाड में, उनमें मेरी कृति बन्दी है

मेरी ज़िद्दी क़लम न चल पाती गैरो की चाह पर

गिरने लगूँ, बाँह दे देना
बुझने लगूँ, स्नेह द देना
थकने लगूँ, छाँह दे देना



अनगिन इन्द्र-धनुष टूटे थे, जिन सपनो की रंगोली पर
वे सब मैंने खुद ही स्वाहा कर डाले पिछली होली पर
सरस्वती को प्रथम मनाया, लक्ष्मी रूठी दीवाली मे
आधी मे उड गये फूल, पर गन्ध रही पूजन-थाली में

आज उसे स्वर दे निखराया मैंने दर्द-कराह पर

गिरने लगूँ, बाँह दे देना
बुझने लगूँ, स्नेह दे देना
थकने लगूँ, छाँह दे देना



अपने लिए जिऊँ तो मृत हूँ, मैं हूँ अश्रु सभी आँखों में
तुम्हें प्यार करने सब वारा, तुम ही एक दिखे लाखों में
उस दिन तुम बोले थे,—कहते लोग सभी हर घर-आँगन के
तुमने इन गीतों के पीछे सपने तोड़ दिये जीवन के।

एक अजब इल्ज़ाम लगा है मेरे शाहन्शाह पर

गिरने लगूँ, बाँह दे देना
बुझने लगूँ, स्नेह दे देना
थकने लगूँ, छाँह दे देना



४

१६

एक मस्ती मिली, दर्द भूलूँ, मगर
नाचती ही नहीं मन-मयूरी अभी
अश्रु ने जो कही, प्राण ने जो लिखी
वह कथा गीत की है अधूरी अभी

धुल रही चाँदनी आज आकाश में
पर हृदय का गगन तो सजल ही रहा
पेड़ से है बँधा साध का चंद्रमा
मेघ लेकिन मचल-चल निरख ही रहा

आज आँसू रहा और सपने कहीं
मिट न पाई, रही एक दूरी अभी
चार श्रोता जहाँ, आठ दर्शक जहाँ
वह सभा गीत की है अधूरी अभी



याचना चाहते एक मुस्कान तो
फूल में कुछ खिलो, धूल में कुछ मिलो
माँगना चाहते एक वरदान तो
मेघ बनकर चलो, नीर बनकर ढलो

कौन अरमान पूरा तुम्हारा हुआ
माँग किसकी हुई है सिंदूरी अभी
इस तुम्हारे कुँवारे सपन के लिए
संहिता प्यार की है अधूरी अभी



टूटता जा रहा मन सघन चोट से
फूटता जा रहा गीत का बाँध है
लेखनी चल रही आज पतवार-सी
खूब मझधार का मिल रहा स्वाद है

हर भयङ्कर लहर एक नागिन बनी
तैरती है कलम की मजूरी अभी
नाव के खून की प्यास जिसको लगी
सभ्यता विश्व की वह अधूरी अभी



यह सही है न कुछ से बहुत है हुआ
किन्तु कितना अधिक आज भी शेष है
रूप के, प्रीति के, गीत के राज में
अनसुना, अनकहा, विघ्न है, द्वेष है

जो पुरानी शपथ भिक्षुणी बन फिरी
पोंछना अश्रु उसके जरूरी अभी
जो गगन को मिली, पर धरा को नहीं
वह सुधा पात्र की है अधूरी अभी



डबडबाती हुई आँख-सी जिन्दगी
रो भरी तो मिला एक आँचल उसे
जब सिसकता हुआ अश्रु उसमें गिरा
तब लगा है मिला एक मरुथल उसे

जो झुलसते दिनों में श्रमिक को मिले
वह बहुत दूर शिमला-मसूरी अभी
धूल जिसम खिला, फूल जिसमें मिला
मान्यता फूल की वह अधूरी अभी



लग रहा ऐसा कि नभ के पास भी मस्तिष्क है
पर मन नहा है
चाँद-सूरज गीत सुनने को किरन-रथ रोक दें
ऐसा अनोखा क्षण नहीं है
जो झकोरा भी हवा का, हाँफता-सा जा रहा,
उसको दिशाओं से गरज है
जो न सुनती दूसरों की, उस घटा के गीत की भी
तो अलग अपनी तरज है
इस तरह दूरी गगन में और मुझमें बढ रही,
यह बात लिखता जा रहा हूँ
गीत की अपनी बही में, विश्व के वातावरण का
हो रहा आयात औ निर्यात, लिखता जा रहा हूँ



पेड बढने में लगा है, फूल खिलने में,
शिकारी भृङ्ग अपनी ताक में है
गन्ध बौराई चली है, पात पर शबनम ढुली है
ओस मेरी आँख में है
तमतमाती धूप भी संघर्ष के आकाश में
भारी तपस्या कर रही है
और छाया की न पूछो, जो कि अगणित बार क्षण में
जी रही है, मर रही है

इस तरह कोई न कोई काम अपनी व्यस्तता का
है सभी के साथ, लिखता जा रहा हूँ
पीर की नदिया किनारे घाट पर दृग के भरा जो
नीर, उसमे धो रहा हूँ आज मनके हाथ
लिखता जा रहा हूँ



जूझती है वायु तरणी से कि तरणी जल-लहरियों से,
लहरियाँ दीर्घ तट से
उठ रहे है, गिर रहे है, शोर करते ज्वार-भाटे
फटते मानो लहर के पाप-घट से
और मेरी ज़िन्दगी का गम भरा सगीत, खुद में डूबकर
बेसुध हुआ है
नाव मेरे गीत की तूफान से टकरा रही, पर
माँगती किससे दुआ है
इस तरह सब ओर है सघर्ष का विभ्राट झझावात
लिखता जा रहा हूँ
काटती मझधार नाका, व्यग करता है सितारा व्योम का
अवदात, लिखता जा रहा हूँ



हो चुका घायल बहुत, तब गीत के इस प्राण-पथी को
मिले पथगीर, जो घायल स्वयम् है
दूसरा जन हो मुसीबत मे, कहो मत पीर खुद की,
हाँ यही प्रचलित नियम है

मजिलो तक जब पहुँच होगी, मिलेगा सुख न इतना,
है कि जितना दुख डगर मे
क्योंकि लापरवाह है, परवाह से मेरी, जगत,
सारी प्रकृति, धुँधले पहर म
इस तरह म हूँ अकेला, गीत रचना कार, लेकर
आज जीवन-कल्प की आशा-भरी सौगात
लिखता जा रहा हूँ
सिर्फ इस उम्मीद पर, होगी कभी तो नेह की
जीवन-मयी बरसात,
लिखता जा रहा हूँ



है बिछी शतरज जीवन की, लगी सघर्ष की जब शह,
हुई तब कल्पना की मात
लिखता जा रहा हूँ
जय-निनादो मे समय के, जारही किस रूप की बारात
लिखता जा रहा हूँ



२१

किसी स्वप्न को खोज लाने डगर पर
उतारा गया है अकेला मुझे
कहाँ का दिया हूँ, किसी का पिया हूँ
सफर पर समय ने ढकेला मुझे

चला पर्यटन के लिए हंस जिस क्षण
हुई हंसनी कुछ उदासी-उदासी
न मौसम सुहाया, न त्यौहार भाया
समा-सी गई नीड़-भर में उदासी

नई कोंपलें कुछ समझ ही न पाईं
घुली रोज़ सी नींद निर्दोष दृग में
पिता किस भयावह डगर पर उड़ा है
उन्हें क्या पता इस बड़े व्यस्त जग में

यहाँ के किसी दीप से स्नेह माँगो
कहेगा, न देना उजाला मुझे
कहीं का दिया हूँ, किसी का पिया हूँ
सफ़र पर समय ने ढकेला मुझे

•

लुटाया हुआ स्नेह लौटा बहुत कम
यही गम मुझे इस सफ़र में अखरता
मगर सोचता हूँ, कसौटी मिली है
चलूँगा निखरता, चलूँगा निखरता

अभी रेलगाड़ी चली जा रही है
खटर-खट खटर-खट घने जंगलों में
कहीं खेत सुख के, कहीं रेत दुख की
कभी मन किरन में, कभी बादलों में

धरे शीश गागर, भरे पीत आँचल
    मधुर मौन कुसुम, अगरु-गन्ध-चन्दन
हवा मेघ की सीढ़ियों से थिरक कर
    चली जा रही लीपने गीत-आँगन

जिधर आँख फेरी, उधर ही निकलता
    दिखा एक रंगीन रेला मु
कहाँ का दिया हूँ, किसी का पिया हूँ
    सफर पर समय ने ढकेला मु

●

मुझे हाट उठती दिखी एक, लेकिन
भरा भी लगा एक मेला मुझे
कहाँ का दिया हूँ, किसी का पिया हूँ
सफर पर समय ने ढकेला मुझे



मिटा गीत में हूँ, बना गीत में हूँ
बिना गीत के और चारा नहीं है
उन्हें प्यार करता कि जिनको जगत ने
दुलारा नहीं है, पुकारा नहीं है

उन्हीं के लिये गीत मेरी निरंतता
उन्हीं के लिये मैं तकाज़ा समय का
नदी-पर्वतों-नीहडों-मरुथलों से
चला पूछता अर्थ सर्जन-प्रलय का

मुझे लग रही जिन्दगी एक पूजन
कला-आरती-दीप-वेला मुझे
कहाँ का दिया हूँ, किसी का पिया हूँ
सफर पर समय ने ढकेला मुझे



विरह एक पथ है, मिलन एक मंज़िल
पड़ी आँधियाँ नागिनों-सी गले में
अगर हो सके, तो सुधा बन चलो तुम
मगन हो महादेव के काफ़िले में

धरे शीश गागर, भरे पीत आँचल
    मधुर मौन कुंकुम, अगरु-गन्ध-चन्दन
हवा मेघ की सीढ़ियों से थिरक कर
    चली आ रही लीपने गीत-आँगन

जिधर आँख फेरी, उधर ही निकलता
    दिखा एक रंगीन मेला मुझे
कहाँ का दिया हूँ, किसी का पिया हूँ
    सफर पर समय ने ढकेला मुझे

२२

रो-रोकर सिन्दूर ढूँढती मधुऋतु मेरे द्वार पर
बाग सजे क्या, दीप जले क्या, और मने त्योहार क्या

सागर-दृग में नीर भरे वह व्योम है, यह धूल है
झनझन से बोझिल-बोझिल हर पात है, हर फूल है
घुटती-घुटती साँसों-सा रुक-रुक कर चलना है पवन
धरती घूम रही लपटों में, झरती सपनों का हवन
शरद निशाएँ गगन-गवाक्षों में युग-युग से बन्द है
हेमन्तों की गति-विधियों पर वासन्ती प्रतिबन्ध है

मन का उत्सव बलि देता धड़कन के हाहाकार पर
गीत छिड़े क्या, प्रीति हँसे क्या, रूप करे सिंगार क्या



भटका-भटका सा है मनवा, धीमा-धीमा राग है
मद्धिम-मद्धिम गति जीवन की, फिर भी मन में आग है
मेरी उजली दोपहरी पर फिर सन्ध्या की छाँह है
सोच रहा जग, मुझको पावस की कितनी परवाह है
मैं नर्कों की वट-पूजा पर स्वर्गों का वरदान हूँ
झाँकी सजी दूर मंदिर में, बिन-देखे हैरान हूँ

स्वप्न नहा आँसू प्रहरी है जब दृग-वन्दनवार पर
दर्शन कठिन महाजन को, मुझ हरिजन का परिवार क्या !



कभी-कभी मेरे सिरहाने आ जाती है चाँदनी
नींद-भरे गुमसुम सपनों को मिल जाती है रागिनी
सोचा करता हूँ दुनियाँ में सुख का नहा अभाव है
कहीं धूप का पलड़ा भारी, कहा भयानक छाँव है

लेकिन अलग न हो सकता मैं, खुद अपनी आवाज से
वंचित करना बहुत कठिन है मुझे सिर्फ अन्दाज से

क्योंकि बहुत से हृदय भरोसा करते मेरे प्यार पर
उनका दरद भुलाकर मेरे जीने में है सार क्या



मिट्टी का रेशा-रेशा असहाय है, निरुपाय है
मिट्टी तोड़े जाता रोज़ी-रोटी का समुदाय है
कुंजी लिये तिजोरी की, अन्याय देश में घूमता
क़त्ल किये सच्चाई का, ऐय्याश झूठ है झूमता
सोना-चाँदी मखमल-रेशम-सा बिकता ईमान है
धूल उड़ रही राहों में भटका-भटका इन्सान है

अनगिन कल्मे आस लगाए, खुले चोर बाज़ार पर
मुझको सपने की छाया में रहने का अधिकार क्या



मरुथल समझ न पाता है मेरी मधुमासी प्यास को
समय घसीटे लिये जा रहा मेरी जीवित लाश को
मैं बहार की करूँ कल्पना कैसे उस मसार में
जो अब तक मानव की किस्मत बाँधे है तलवार में
जहाँ मध्य-युग लौट रहा है सिद्धान्तों की आड़ में
नया-नया ईंधन पड़ता है, सुलगे हुए पहाड़ में
मिट्टी की सुधियाँ साधे हैं ज्वालाओं के ज्वार पर
तट पर बैठा बह जाने दूँ मैं उनको मझधार क्या



२३

जब भी गिरा एक आँसू कहीं,
चुपचाप तुम रह सके तब नहीं,
भटका किये बादलों-से दुखी हो

लेकिन अलग न हो सकता मैं, खुद अपनी आवाज से
वंचित करना बहुत कठिन है मुझे सिर्फ अन्दाज से

क्योंकि बहुत से हृदय भरोसा करते मेरे प्यार पर
उनका दरद भुलाकर मेरे जीने में है सार क्या



मिट्टी का रेशा-रेशा असहाय है, निरुपाय है
मिट्टी तोड़े जाता रोज़ी-रोटी का समुदाय है
कुंजी लिये तिजोरी की, अन्याय देश में घूमता
कलम लिये सच्चाई का, ऐय्याश झूठ है झूमता
सोना-चाँदी मखमल-रेशम-सा बिकता ईमान है
धूल उड़ रही राहों में भटका-भटका इन्सान है

अनगिन कलमें आस लगाए, खुले चोर बाजार पर
मुझको सपने की छाया में रहने का अधिकार क्या



मरुथल समझ न पाता है मेरी मधुमासी प्यास को
समय घसीटे लिये जा रहा मेरी जीवित लाश को
मैं बहार की करूँ कल्पना कैसे उस संसार में
जो अब तक मानव की किस्मत बाँधे है तलवार में
जहाँ मध्य-युग लौट रहा है सिद्धान्तों की आड़ में
नया-नया ईंधन पड़ता है, सुलगे हुए पहाड़ में

मिट्टी की सुधियाँ साधे है ज्वालाओं के ज्वार पर
तट पर बैठा तट जाने दूँ मैं उनको मझधार क्या



२३

जब भी गिरा एक आँसू कहीं,
चुपचाप तुम रह सके तब नहीं,
भटका किये बादलों-से दुखी हो

तुमको भुलावा दिया हर दिशा ने,
लालच दिया अन्धकारी निशा ने,
लेकिन दिखा काँपता जब दिया,
तुमने उसे प्यार रवि-सा किया,
तब वह खिला एक सूरजमुखी हो



जिन पूजनों के रहोगे अधूरे
तुम पर हँसे मन्दिरों के कँगूरे
लेकिन तुम्हें जब मिली वह व्यथा,
जिसकी रही अनसुनी ही कथा,
तुमको लगा काश यह भी सुखी हो



पीछे चला आ रहा कारवाँ था
तुमने यही सिर्फ उससे कहा था
पूरा करो यह सफर, हम-सफर,
हम तुम चलें उस निमिष के नगर,
मज़िल कि जिसके चरण में झुकी हो



२४

सपन सभी जो,
रुदन सभी जो,
खिले नयन मे, नही तुम्हारे
मुझे प्रेरणा
मिली बहुत कुछ,
मगर नहीं सन, नदी-किनारे

नहीं तुम्हारा ख़याल आया, निहार पूनम खुले गगन की
सदा नहीं तुम दिये सुनाई, बहुत सुनी रागिनी चमन की
सुबह हुई तो मुझे लगा ये, निशा समय की गुज़र चुकी
नवीन-शिशु-सी लगी लुभाने, प्रसन्न मूरत खिले सुमन की
जवान किरनें,
लगीं थिरकने,
पलक उठाए, अलक सँवारे
मुझे प्रेरणा
मिली बहुत कुछ,
मगर नहीं सब, नदी-किनारे



उजड गई बस्तियाँ कि जिनकी, झुलस झुलस भूख की चिता में
निगाह रोई, रहे न आँसू, नयन मरुस्थल बने व्यथा में
अधर पियासे रहे, अधूरी रही आरजू, टुटे श्रमों
उन्हें निसारा गया, दुलारा गया नहीं, विश्व-सभ्यता में
उन्हें भुलाकर,
उन्हें रुला कर,
विहँस न सकते, नयन हमारे
मुझे प्रेरणा,
मिली बहुत कुछ,
मगर नहीं सब, नदी-किनारे

मिलन तुम्हारा मुझे लुभाता, विरह तुम्हारा मुझे दुखाता
मगर समय की थपेड खाता-हुआ मनुज भी मुझे बुलाता
सदा सँदेशा तुम्हें पठाऊँ, घुमड रहे सावनो घनो से
तुम्हीं कहो जब बदल रहा युग, यही अभी क्या तुम्हे सुहाता

कहो स्वयम् तुम
न जी रहे क्या,
कठोर संघर्ष के सहारे
मुझे प्रेरणा
मिली बहुत कुछ,
मगर नहीं सब, नदी-किनारे

•

कहीं उजडता, कहीं सँवरता, भविष्य, इस देश के निलय में
दिवस-निशा-ज़िन्दगी डगर पर, कभी सृजन में, कभी प्रलय में
लगी हुई है असख्य तोपें, खुली हुई थैलियाँ अनर्थी
तुम्हीं कहो क्या लिखूँ कि जब एशिया उठा इस कठिन समय में

उमड रहे,
क्रांति के बटोही,
चमक रहे, शान्ति के सितारे
मुझे प्रेरणा
मिली बहुत कुछ,
मगर नहीं सब, नदी किनारे

●

२५

इस दिये के माथ पर यदि स्नेह का अभिषेक हो तो
यह भी पात्र जलन का हो सकता जग के इतिहास में
सूरज और चमक सकता है इस फैले आकाश में

किसे पता इसके ही हाथों होना हो अनमोल सृजन
कौन कहे इसकी किम्मत में हो तुम सबसे अधिक वज़न

मरा-खपा तूफानों में यह रेगिस्तानों का पौधा
देना हो यदि स्नेह इसे तो करो नहा कोई सौदा

तुम बहार हो और तुम्हारे चरणों में यह सावन है
जो पलाश-वन से गुज़रा हो, यह वह झरना पावन है

इस उजागर स्वप्न के नयनों का आँसू पोंछ लो तो
लोहू भी ढे सकता है यह मरणोन्मुख उल्लास में
नई रोशनी भर सकता है, बुझते हुए प्रकाश में



इसमें भी दम हो सकता है, तुम वीरान कहो चाहे
रचनाकारों की बिरादरी में अनजान कहो चाहे

यह गीतों की गागर में सागर बनकर लहराता है
जाने कहाँ-कहाँ से प्रतिध्वनि आती, जब यह गाता है

बरस-बरस जाते है बादल, फूट फूट पड़ती कोंपल
डोल-डोल जाता है चातक, बोल-बोल उठती कोयल

इस सुबह के गीत को यदि राई-भर भी प्यार दो तो
यह दुख के पर्वत ढो सकता सुख की हर साँस में
यह सयोग जोड सकता है हर टूटे विश्वास मे



तुम किस राज-भवन की मज़िल, यह किस मिट्टी का ढेला
तुम जिन तूफ़ानों से बचते, यह उनमें पल-पल खेला

नहीं चाहता दया-कृपा यह, वह तो ढोंग तमाशा है
भूखा है बस यह दुलार का, और स्नेह का प्यासा है

स्वप्न इसे मगलाचरण है, आँसू राम-कहानी है
इस ददलि की दुनियाँ में तो पानी ही पानी है

इस किरन की पखुरी पर किरनों का आलेख हो तो
यह भी कुछ सौरभ भर सकता है सूने मधुमास मे
तुरत ढाल सकता है शबनम जलते हुए पलाश मे



२६

सुख भी छूटा, दुख भी फूटा, डूबा दहरी-द्वारा रे
तूफानों ने शोर किया पर तेरा गीत न हारा रे
डगमग करते पैरों वाले ! पथ में रुकना भूल है

तेरे बुझने का तो कोई अर्थ नहीं
तुझ पर अम्बर का चन्दा न्यौछावर है
तू उन सात सितारों का ध्रुवतारा है
मंज़िल से पड चुकी कि जिनकी भाँवर है

सोच-समझ कर लौट गया है तुझ तक आ अँधियारा रे
नेह-पत्र सावन का लाया बादल का हरकारा रे
आँसू से भीगा-भीगा आँधी का धूल-दुकूल है



सपना तेरी नाव कि जिसका माझी तू
नयन-महासागर के गहरे पानी में
तूने तट की झाँकी जैसे पा ली है
अनचाहे तूफ़ानों की अगवानी में

तुझको उठती हुई लहर ने मिटते हुए निहारा रे
तट पर जागी हुई भोर ने अपना रूप सँवारा रे
बडी दूर से देख लिया उसने तेरा मस्तूल है

आई है जो बाढ़ उतर भी जाएगी
आँसू ही तेरा दर्पन बन जाएगा

संघर्षों की चलनी ही कुछ ऐसी है
जिससे जीवन का सौरभ छन आएगा

जैसे गंगा में मिलने जाती जमुना की धारा रे
रात-ढले पर क्षितिज-कुएँ में ढुलके उसका पारा रे
ऐसे ही झोंके में उड़ता पगडण्डी का शूल है



२७

मन ! तुम न टूटो अभी हार कर,
आँधी न हरदम रही द्वार पर,
तुम भी न दुर्बल रहोगे सदा

दी है चुनौती तुम्हें शाम ने
हँसता हुआ काल है सामने
शर ! तुम न छूटो अभी रोष से,
गुण छुप न पाते किसी दोष से,
तुम भी न दुखड़ा कहोगे सदा



गहरा बहुत नीर है दृष्टि का
जलयान संक्षिप्त है सृष्टि का
दृग ! तुम न फूटो, रहो गागरी,
हर क्षण न गहरी व्यथा बावरी,
तुम भी न तृण से बहोगे सदा



तुम आरती गा रहे, भोर है
सागर किये जा रहा शोर है
स्वर ! तुम न रूठो अभी मन्त्र से,
होता न कुछ घोष के तन्त्र से,
तुम भी पराजित न होगे सदा



नभ हो कि मैं जानते हैं सभी
गहरी बहुत है तुम्हारी व्यथा
आकाश के हर दुखी मेघ ने
मुझमें कही है तुम्हारी कथा
वे जो कि तुमसे अधिक है करुण
जो चाहते हैं तुम्हारी शरण
उनकी सुबह ढूँढ़ना है तुम्हें
हर एक मन के चरागाह से



मझधार में तुम पड़े नाव-से
पर दूसरों के निकट कूल है
हर डबडबाती हुई आँख को
दुखड़ा सुनाना बड़ी भूल है
उसकी शिकन लो स्वयम् माथ पर
उससे कहो ज़िन्दगी है अमर
तन का दिया प्रश्न है कर रहा
मन पर बनी एक दरगाह से



तुमको नहीं चाँदनी मिल सकी
मेरा कहाँ चन्द्रमा दास है

इस ज़िन्दगी की निकल सृष्टि में
किसने रचाया कहाँ रास है
अपनी सुबह-शाम से भी परे
दुनियाँ करोड़ों चरण हैं धरे
जीवन सदा पूर्ण होता नहीं
केवल प्रणयवान निर्वाह से



२६

निशा के राजकुँवर !
चला तू आज किधर,
दिशा की पलकों से
उठा कर चन्दरिमा

उजाली किरन-किरन है रूप निखारे
अभी से उसे विरह तू नहीं सिखा रे
किसी ने तुझे निरख कर गीत लिखा रे
पवन है बाँसुरिया
अरे ओ कान्हरिया !
गगन के गोकुल में
रही राधा शरमा



नयन की नगरी गगरी लेकर प्यासी
धरा से रूठ नहीं सपने आकाशी
कठिनता से मिलती है पूरनमासी
चुनरिया साध लिये
सधा उन्माद लिये
डगरिया पनघट की
कहे तेरी महिमा



किसी देवालय का तू देव अनोखा
कि जो भी आया, तूने कभी न रोका
बना है संगमरमरी राम-झरोखा
अभी चल रही कथा
किसी को नहीं पता
कभी खुद मन्दिर से
निकल जाती प्रतिमा



६

३०

कुंकुम निखेरती सुबह-सुहागिन गाती है
भर माँग-माँग सिन्दूर,
न बैठो दूर,
कि फागुन गा लो रे !

पीले सिंहासन पर सूरज बैठा जमकर
वासन्ती राजतिलक के पल जगमगा रहे
कोयल-पपीहरे उठते मगल-गायन को
उत्साही पवन झकोरे ताली बजा रहे

नाचते-नाचते तुतली तितली आती है
नूपुर में जय-जय कार,
नयन में प्यार,
कि होश सम्हाले रे!

•

रेशम पाटल के लाल्म शरम झरोखे से
मधुऋतु रानी मधुवन का उत्सव देख रही
वह प्यार-प्यार मे वेणी की रजनीगन्धा
चुपके-चुपके मान्सल भीड़ों पर फेंक रही

भौरो की टोली फूलो को समझाती है
तुम जानो जी की प्यास
लगी है आस
हमें अपना लो रे!

•

कचन किरनें पानी से रास रचाती है
सतरगी सपने साध लिये मँडराते हैं
रसवन्ती बाहें सिमटी हुई लजाती हैं
श्वासो के अश्वारोही घिर-घिर आते है

चचल बहार रगो मे भाँग नहाती है
गाती है शबनम गीत,
मदिर है प्रीति,
नहाने वालो रे !



फूले पलाश-से गीत बसन्ती छाया मे
पतझर का बादल यहाँ नहीं घिर पाएगा
मम्ता के आलम की मिट्टी मधुमासित है
इसका कन-कन यौवन का गीत सुनाएगा

मधुऋतु कुजों पर जीवन-खेल लगाती है
दावानल का उत्पात,
अँधेरी रात,
उसे समझा लो रे !



३१

कि जब नील-नभ में चमकता सितारा
बहुत याद आता जुहू का किनारा

लेखनी-बेला

पसारे गगन बीच सुकुमार बाहें
हज़ारों हिलोर उठाएँ निगाहें
निखेरे समुद्री सपन है पवन में
कुतूहल भरे दर्शकों के नयन में

कि जब डूबता है किरन का नज़ारा
हृदय सोचता है कि कह दे 'दुबारा'"



गरम रेत से त्रस्त बीहड़ अचचल
यहाँ आ गया है कहीं का मरुस्थल
खिली चाँदनी है, चरण धो रही है
झुलसती व्यथा अब तरल हो रही है

किसी दिन, किसी ने, किसी को पुकारा
पलक को उठाया, अलक को सँवारा



जुही की कली-सी महकती जुह्न है
किसी कोकिला की मचलती कुहू है
किसी गूँजते-गीत की रागिनी है
किसी व्योम की झूमती चाँदनी है

कि जब ज्वार करता मिलन का इशारा
नयन में छलकता जलधि-नीर खारा

सलौने गगन की, महकती हवाएँ
किसी मेघ के बोझ से दब न जाएँ
न ताण्डव किसी बूँद से फूट जाए
कहीं वज्र नभ से नहीं टूट जाए

कि जब यह समा है, मधुर मौन प्यारा
किसी तीसरे नेत्र ने क्यों निहारा



३२

सावन ने वो आँखें भर डालीं बादल से
देखें बहार किस उदयाचल से आती है

बन-बन कर इन्द्रधनुष कितने ही टूट गए
शर-सी पुरवाई चली गई नक्षत्रों में
बिजली का मन आहत हो-हो कर तड़प उठा
औ' बरस उठा बूँदों के भेजे-पत्रों में

कुछ ऐसा दर्द लुटाया उसने आँचल से
पीड़ा की धुन ही हर पायल से आती है



डूबे सपनों के खेत किसी जमुना-जल में
बह गए गाँव के गाँव बाढ़ आई ऐसी
अमराई डूबी, डूबे उसके झूले भी
सागर से मिलने नदिया इतराई ऐसी

सब कुछ खोकर रोनेवाले से पूछो तो
अब कौन हवा किस मलयाचल से आती है



ऐसा घेरा है बरसाती अँधियारी ने
संघर्षों ने - शहनाई ऐसी तोड़ी है
रचना की मंगल-वेला फिर कुहरे में है
करनी ने अपनी म आख़िर क्या छोड़ी है

फागुन के लिये मिठाँमन छोड़ेगा सावन
आवाज़ यही मन की मंज़िल से आती है

बादल से आँख मिला कर चलने वाले पर
जब बिजली गिरना ही है तो फिर गिरने दो
गीतों की माटी में नद भी मिल जाएगी
चाहो तो मधुऋतु में भी बादल घिरने दो

मेरी धड़कन का भ्रमर उड़ेगा गुन-गुन कर
ऐसी सुगन्ध पाटल-पाटल से आती है



२३

ठण्डी-ठण्डी छाँव है
मीठा-मीठा राग है
धरती जैसी आँख में
सपने जैसा बाग है

हल्की-हल्की दूब है
चलती-फिरती छाँव है
उड़ती गिरती है हवा
भूला-भूला गाँव है

खोई-खोई धूप की
बिखरी-बिखरी प्यास है
झरनों-वाली बाँह में
पर्वत क्या, आकाश है

•

नीला-नीला व्योम है
नीली-नीली रात है
भीगे-भीगे फूल हैं
झीनी-झीनी बात है

जंगल की सुनसान में
प्राणों-सी गहराइयाँ
गहरी-गहरी कन्दरा
आहों-सी तनहाइयाँ

•

ठण्डक की अँगड़ाइयाँ
गर्मी मेरी साँस में
जैसे पत्ता एक ही
कोई खेले ताश में

चलती-फिरती बीन पर
पत्तों का संगीत है
देखें सुनता कौन है
किससे किसकी प्रीति है

•

बूँदाबाँदी देखकर
आतप है पाताल में
बूँदों की ही भीड़ है
मैदानों के 'हॉल' में

पर्वत मेरा मंच है
छिड़ती जिस पर रागिनी
गाता हूँ मैं झूमकर
सुनती सारी यामिनी

दुहराती संगीत हैं
ऊँची-नीची वादियाँ
पतली-सी पगडण्डियाँ
टेढ़ी - मेढ़ी घाटियाँ

आँधी है झकझोरती
झुकने वाली डाल को
जुल्मी करता तंग है
जैसे हर कंगाल को

•

दृश्यों के सैलाब में
रंगों की भरमार है
लहरों की आवाज़ में
गूँजा पारावार है

किसलय-दुलहन डोलती
मारुत के हिल्लोल में
परिवर्तन के चिह्न हैं
जगती के भूगोल में

•

पर्वत है या मेघ है
बादल है या शृङ्ग है
कहते कुछ बनता नहीं
किसका कैसा रङ्ग है

बादल और पहाड़ के
अंगों में है भेद क्या ?
दोनों ही मजदूर हैं
बहता है ना स्वेद क्या ?

•

चश्मा हर पाषाण से
फूटे मन के स्नेह-सा
पेड़ों के झुक-झूम में
बन जाता है गेह-सा

ऊँची-नीची खाइयाँ
टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता
लगता है जैसे हमें
इनसे ही है वास्ता

कैसे कोई छोड दे
पाकर ऐसे कोष को
वर्णन करना है कठिन
लिख चाहे सन्तोष को

भागी आती धार है
जैसे मेरी प्रियतमा
मिलने को इठला रही
पाकर मस्ती का समाँ

मै भी वादी मे खडा
खोया-सा हूँ डोलता
कैसे क्या-क्या आँकलूँ
अपने मन में बोलता

नीले आकाश पर
मसूरी का राज है
उसको औरों पर नहा
अपने पर ही नाज़ है

चट्टानों की भीड है
साया है चट्टान की
बहती फेनिल धार है
कल-कल झर-झर गान की

पर्वत चारों ओर है
वादी बीचो-बीच है
जिसमें भर कर मेघ भी
मन को लेता खींच है

इतनी ऊँची है नहीं
सिद्धान्तों की श्रेणियाँ
जितनी इस सुनसान मे
लटकी छवि की वेणियाँ

किरणों का अभिषक ले
रानी बैठी शान से
मेरी ओर निहार कर
कहती इतमीनान से—

"आया तू परदेस से
मेरे ठण्डे गाँव मे
किरनो जेसे गीत को
बिखरा मेरी छाँव में

भावो के वरदान से
मेरा माथा चूम ले
मै भी तुझमें झूम लूँ
तू भी मुझमें झूम ले

•

मै तो तन की बीन हूँ
तू है मन का गीत रे
मन के गीतो के बिना
होती है कब प्रीति रे

आए मेरे पास तो
डूबूँ तेरे गीत में
जीतूँ तेरी हार मे
हारूँ तेरी जीत में

•

सिंहासन खाली पडा
राजा तेरे वास्ते
आ जा भँवरे की तरह
फल-फूलो के रास्ते

कैसा अच्छा व्योम है
खिलता मेरा फूल है
झूला मेरी डाल का
दुनियाँ जाती झूल है

•

आमत्रण की बात पर
पहली-पहली बार है
तुझको यदि स्वीकार है
मुझको कब इन्कार है

जाने कब से ढूँढती
तुझको मै आकाश में
आखिर तू मिल ही गया
मेरे ही आवास में

छेड़ ज़रा सगीत तू
पूछ ज़रा मन की व्यथा
देखूँ तेरी कल्पना
कहती है क्या-क्या कथा

झूम कि मेरी प्यास की
सीमाएँ है टूटतीं
देख कि मेरे स्नेह की
धाराएँ है फूटती

•

रानी के इस राज मे
राजा ! अपना गीत गा
मेरी बाज़ी हार कर
अपनी बाज़ी जीत जा

कैसा मीठा है समा
मेरे नीलम देश का
सानी मिलता है कहाँ
मेरे लहरिल केश का

•

मेरी ठण्डी साँस का
समझेगा क्या मर्म तू
अनबोला जो कुछ रहा
समझेगा क्या शर्म तू

आ शीतल हो प्यार से
सावन है, मधुमास है
मेरे अन्धे प्राण पर
हरा-हरा आकाश है

•

चारो ओर बहार है
चारो ओर खुमार है
तू है, मै हूँ, गीत है,
हरियाला ससार है

जीवन इस ससार का
चिन्ताओ से दूर है
यह यौवन का देश तो
स्वर्गों से भरपूर है

पारिजात खिलता यहाँ
नन्दन के सीमान्त मे
गुजन करता डोल जा
भँवरे मेरे प्रान्त में

गीतों के चचल भ्रमर
आमत्रण रस-पान का
किसको देता कौन है
बिन-मागे वरदान का

•

भूरे-भूरे शृङ्ग पर
जीवन-सी चट्टान है
जिस पर बैठा हस है
पखो मे तूफान है

पर्वत-खेतो पर बिछी
हरियाली घनघोर है
यौवन-सी निर्बन्ध है
चचल मन का मोर है

•

रूमानी आकाश का
फीरोजी सिंगार है
शेफाली-सी भूमि पर
ऊँचा तोरण द्वार है

एक बड़ी चट्टान ही
है प्रहरी के नाम पर
जो निर्मम निर्द्वन्द्व-सी
टटी हुई है काम पर

•

चलती-फिरती बीन पर
पत्तो का सगीत है
देखें सुनता कौन है
किसको किससे प्रीति है

ठण्डक की अँगडाइयाँ
गर्मी मेरी साँस में
जैसे पत्ता एक ही
कोई खेले ताश में

७

जगल की सुनसान में
प्राणों-सी गहराइयाँ
गहरी-गहरी कन्दरा
आहों-सी तनहाइयाँ

नीला-नीला व्योम है
नीली-नीली रात है
भीगे-भीगे फूल है
झीनी-झीनी बात है



अम्बर ही तो झील है
दर्शन ही तो प्यास है
झरने वाली बाँह मे
पर्वत क्या आकाश है

हल्की-हल्की दूर है
चलती-फिरती छाँव है
उठती-गिरती है हवा
भूला-भूला गाँव है



ठण्डी-ठण्डी छाँव है
मीठा-मीठा राग है
आँसू-जैसा फॉल है
सपने-जैसा बाग है



३४

नीली निशा के किनारे
खुलते बहुत से किवारे,
हैं किस महल के ?

सूखे नयन, तुम्हारे बिना, सुलगते रहे अँगारों-से
अपना चमन, तुम्हारे बिना, सजा ही नहीं बहारों से
फागुन मिला, बहुत मन हुआ, कि झूमे जरा पलाशों में
आँखें मगर, रहीं अनमनी, सभी फागुनी तमाशों में

छाए रहे, लुभाए रहे, बिछुड़ कर दिशा-दिशा में तुम
खिलते रहे, महकते रहे, समय की दिशा-दिशा में हम



ढोलक वही, मँजीरा वही, मुरलिया वही, वही नदिया
सावन बिना, नहीं कुछ बना, अजब-सी रही सभी दुनियाँ
महुआ विकल, कि ग्वाला विकल, रही सुधि किसी दुलारे की
ओढ़े हरी चुनरिया, खड़ी पहाड़ी नदी-किनारे की

तुम ही कहो कि कितने हिले मिले हो लहर-लहर में तुम
भाते तुम्हीं, सुहाते तुम्हीं, निहार किसी पहर में हम



जुगनू बने तुम्हारे दिये, मृदंगें बजीं, छिड़ी कजरी
बिजली उठी, थिरकने लगी, वृंदावन-जमुन-जली बजरी
राधा नहीं, कन्हैया कहा, अलावें जलीं, सितारों की
झींगुर-धुनें, न कैसे सुने, कि रिमझिम छिड़ी फुहारों की

बूँदें गिरा, पिलाते सुधा, धरा को नई फसल में तुम
ओ हमसफर! भटकने किधर, तुम्हें ढूँढ़ते असल में हम

३६

पगडण्डी से जाने वाली कृपक-वधू के वेप मे
नई धूप का चीर उडाती आती युग की भोर है

पूरब के गेरुए मंच पर दृष्टि और श्रुति आमंत्रित
खेत-खेत में फसल झूम पढ़ती अभिनन्दन पत्र है
चरवाहों की मधुर बँसुरिया रह-रह कर यह गाती है
नई दिशा के माथे पर कितना कुंकुम एकत्र है

रंगमंच पर किसी नाट्य का परदा उठने से पहले
उत्सुक चर्चागत कोलाहल-सा खग-कुल का शोर है

•

कुंजों के विश्राम-गृहों में देर तलक सोनेवाले
उजड़े-हुए रईसों-जैसे दिवा-स्वप्न में लीन हैं
कर्मठ हँसिया उठा, ज्वार के व्यर्थ गर्व को काटने
अम्बर के सिंहासन पर सूरज राजा आसीन हैं

किसी संगठित सेना की अत्यन्त श्रेष्ठ टुकड़ी-जैसी
किरन कर रही पीछा, भागा जाता तम का चोर है

●

३७

दृग की दुकान पर
मोती बिका नहीं
आँखें मिलीं तुम्हें
फिर भी दिखा नहीं

यह भी नहीं सही
वह भी नहीं सही
केवल तुम्हीं सफल
कीचड़-भरे कमल
कोई भ्रमर कभी
तुम पर रुका नहीं



मैने दिया दिया
तुमने नहीं लिया
जो भी सृजन हुआ
तुमको वमन हुआ
मन का अहम-वहम
अब तक थका नहीं



सूरज बहुत चढ़ा,
पर दिख नहीं पड़ा
बोले 'चिराग हैं
गाता विहाग है
पिछला सनेह ऋण
अब तक चुका नहीं'
तुममें क्षमा मनुज
अपना सका नहीं



३८

जिस समय से रचा गीत है
वह नयन का नया मीत है,
इक दुल्हन की तरह

है उमड़ता बहुत आज प्यार
देखता हूँ उसे बार-बार
जिस घड़ी मे जला दीप है
उस घड़ी से बसा द्वीप है,
इक भवन की तरह



कुछ अजब-सी उठी एक प्यास
है गज़ब आँसुओं का लिबास
जिस निमिष से खिला फूल है
आँख में सज रही धूल है,
इक सपन की तरह



छन्द ने भाव ने, छल किया
जो मुझे यह नशा दे दिया
मन अटकता हुआ चल रहा,
मै भटकता हुआ चल रहा,
नील घन की तरह



३६

किसने निहारा ?
तम की परत पर परत तो चढ़ी
पर न चमका सितारा !

दीपक बुझा और सोचा कि कोई नहीं नामलेवा
सूने पड़े मन्दिरों से पुजारी गए
शेष थी देवता की न सेवा
मेरी व्यथा को सुने निज
मधुर आँख में भर गया किस तरह नीर खारा
किसने निहारा ?



किसने पुकारा ?
भारी शिकायत रही नाम को
स्वर न फूटा दुबारा !
भूले हुए लोग थे एक युग में सुनी रागिनी को
टूटी हुई बीन, रूठा हुआ तार
भाया न कुछ सरगमों के धनी को
मेरी दुखी भैरवी की प्रथम पंक्ति
सुन क्यों किसी ने लिया एकतारा ?
किसने पुकारा ?



किसने दुलारा ?
आया बड़ी साध से स्वप्न
पर खुल न पाया दुआरा !

जो आरज़ू भी उठी, वह गिरी पथ के मोड़ पर ही
हर प्यास घट के निकट जा सकी,
तृप्ति के पद-कमल, सिर्फ दम तोड़ कर ही
मेरी अकेली पिपासा बहुत थी
किसी ने उसे क्यों अधर से सँवारा
किसने दुलारा ?



४०

मैंने कोहनूर-सा प्यार किया जो चमका अम्बर मे
मैंने सोचा शायद मुकुट परख का इसको मिल जाए

जब वह सघर्षों की कठिन कसौटी पर भी खरा रहा
उसको किसी प्रणय-इतिहासकार ने तिथि के साथ लिख
लेकिन जब लकीर का हर फकीर टकराया रस्ते पर
उसने कहा बिचारा कोहनूर था, मिट्टी-मोल बिक

मुझको दो ससार मिले जीवन के इस समतर में
सच पूछो तो दोनों और निकट मेरी मज़िल लाए



मैंने हीरे-जैसा गीत लिखा, जो गूँजा तारों में
मैंने सोचा शायद यह भी जौहर कहीं दिखा जाए

देखा उसे जौहरी ने तो वह यों डूब गया रस में
जैसे गागर में सागर पा जाए रेगिस्तानी श्र
देखा उसे किसी बहुधन्धी ने तो उड़ती नजरों से
जैसे देख किसी सरज को आँखों में घिर आए त

मुझको अलग-अलग मुस्कान मिली दोनों दरबारों में
मैंने निश्चय किया कि दोनों पर ही गीत लिखा जाए



४१

चूल्हा जलता रहे जिन्दगी का सदा,
इसीलिये अनमोल गीत ! मैं तुझे दे रहा माटी मोल

 लेखनी-बेला

तू मुझको कितना प्यारा है क्या कहूँ
कह कर बतलाना भी तेरे जन्म-दिवस का है अप
तुझे गुनगुना कर सुनना तो है मधुर
लेकिन करना प्यार नहीं ऐसा जैसा करना अह

अपने जीवन में ईंधन के वास्ते,
मैं स्वार्थी भी हूँ निर्दय भी, पुत्र ! न तू मेरी जय



ओ रहस्य मेरी नभ-चुम्बी ख्याति के !
कितना अखर रहा है मुझको तेरा यह अव्यक्त नि
जैसे दशरथ के घायल आदेश से
राम अनुज औ' भार्या-सँग वनवासी हो, वनवासी, ओ

तू न पर्यटक सिक्का है टकसाल का
जिंदा दुधमुहे ! भूल न जाना अपने कुनबे का भूगं



४२

मेरे मन तुम पढो और समझो तो इस ससार को
यहाँ आदमी एक नगर है जो अन्दर वीरान है

मै भी इसके नगर-राज्य का कोना-कोना छान रहा
कोशिश मेरी यह कि आँख से कोई दृश्य न हो ओझल
परकोटे के बाहर मनहर मूरत का आकर्षण है
भीतर उजडे फुलबाग मे चुप है नेहा की कोयल

नहा सलौना सोनमहल यह पाषाणो का ढेर है
इन्द्रधनुष का द्वार बना पर उसमें कठिन प्रवेश है

प्रेम यहाँ स्वार्थो की गलियो मे खुफिया समझा जाता
एक पुरानी खण्डहर कारा मे बन्दी ईमान है



यह है अद्भुत राजनगरिया महासमर के बाद की
व्यवहारो की कार्य-कुशलता का ही नाम समाज है
इसके स्वर्ण सराफे मे, कच्चे मीना बाज़ार म
नोटो की मीनार पहनती अधिकारो का ताज है

झूठ यहाँ हर रोज़ नया बन आता वक्त निहार कर
प्यार सिर्फ अहसान प्रदर्शन पोस्टर-सा दीवार पर

मेरे मन तुम चकित न हो इस चलती-फिरती गठरी पर
अपने में ही केन्द्रित-सीमित युग का यह इन्सान है



४३

कलम चल रही है कागज पर, नाव चल रही सागर में
देखूँ भर सकता हूँ कितना दर्द गीत की गागर में

धूल बनूँ तो बनूँ कभी, इस वक्त बहार-किनारे हूँ
सूरज की हर किरन भेंटने दोनों हाथ पसारे हूँ

प्यार, रूप, रस, गन्ध विश्व के, स्वयम् सिमिटते आते हैं
मूर्ति बनी प्रेरणा जमी है, मैं आरती उतारे हूँ

पूछे क्या घर-द्वार पुजारी, जो भक्ती में खोया है
गाए क्या-क्या राग कि गायक सुख के आँसू रोया है
मांगे क्या वरदान कि याचक सुध-बुध खोकर सोया है

टूटे क्या आकाश कि पागल का मन नहीं स्वयम् कर में
देखूँ भर सकता हूँ कितना प्यार गीत की गागर में



साँझ हो रही, धूप घट रही, पाँव बढ रहे हैं तम के
डूबा सूरज जली चिता सा, गीत गा रहा मातम के

लेकिन अपने जीवन के अगले-पिछले निश्वास लिये
स्वेद-अश्रु-कण पोंछ रही लेखनी थकान-भरे श्रम के

आँख अभी निंदिया के घर में जोड रही टूटे सपने
दीप अभी दुनियाँ के आँगन में बैठा ही है तपने
फूल अभी भँवरे की सुधि में लगा ओस-माला जपने

धूल किसी रावण-रथ पर रोती सीता-सी अम्बर में
देखूँ भर सकता हूँ कितना दर्द गीत की गागर में

रात मुझे दे रही रोशनी, अपनी आँखों का पानी
मंज़िल दूर खड़ी है मुझसे, फिर भी करती अगवानी

मीत मिल रहे हैं पड़ाव पर, अलग-अलग आवाज़ों के
आगे बढ़ने को कहती नैपथ्यों की कोरस-वाणी

वह मन ही मेरा मन्दिर है, जहाँ नेह से जले दिया
वह क्षण ही मेरी मसजिद है, मरा मनुज भी जहाँ जिया
वह तृण ही मेरा गिरजा है, ज्वार कि जिसने जीत लिया

वह धन ही मेरा गुरुद्वारा, जो युग-युग के घर-घर में
देखूँ भर सकता हूँ कितना अर्थ गीत की गागर में



४४

तोडने को डोर पल में तोड दूं मुश्किल नहीं है
किन्तु मन की और ही कुछ राय है

मन यही मुझसे कहा करता कि प्यारे !
जो समन्दर है उसे परवाह क्या है
भाप ही है मेघ, बादल ही नदी है
सब तुझी मे आ मिलेंगे, राह क्या है
एक अँधियारी अजन है, हर दिशा से ढल रही है
किन्तु चन्दा तो तुझे अपनाय है

•

सोचता हूँ मैं कभी यह भी, किसी दिन
आदमी से आदमी की होड भी दम तोड देगी
हर तरह से भागने की दौड कब तक
ख्याल मेरा है कि उसको राह ही खुद छोड देगी
इस तरह से क्या बटोही को मिली मंज़िल कहीं है
इस तरह का हर मुसाफिर जो शुरू मे शेर-सा था
अन्तत वह गाय है

•

टूटना आसान है, जुडना कठिन है
जिन्दगी मे है अधूरी जोड-बाकी
इसलिये षटयन्त्र कोई हो कहा से
मैं उसे मना दिया करता निशा की
जानता हूँ यह निशा भी हार-थक कर ढल रही है
लग गई उसको सुबह की हाय है

•

४५

ओ समय की वसन्ती किरन !
अश्रु क्षण के सपन जागरण !
डबडबाना नहीं

बस रहा शूल का गाँव है
काँपता गन्ध का पाँव है

इसलिए ओ सुबह के चरण !
ज़िन्दगी के पथिक आमरण !
डगमगाना नहीं



गीत भी माँगता भीख है
इन दिनों कुछ नहीं ठीक है

रोशनी से सजाना गगन
और बहना कि जैसे पवन
तिलमिलाना नहीं



पाठ तेरी जलन का लिये
हर निशा में जलेंगे दिये

गोद लेगा तुझे हर पवन
चाहते हैं सभी धूप-धन
टिमटिमाना नहा



रात की पूनम से नर वैर
चाँद से तुम्हें बुराई मिली
तृप्ति को जन-जन भी तुम गले
प्यास से तुम्हें बधाई मिली

नखत की सभा गगन में हुई
सपन की सभा नयन में हुई
अधर ने नहीं अधर को छुआ
चूम कर अलक-पलक ही दुआ

मेघ को एक बार देखा
दर्द का बादल तुम्हें लगा
किन्तु जब बार-बार देखा
चाँद-सा कोमल तुम्हें लगा

•

राह चलते थे तुम चुपचाप
किसी वीरान चमन के पास
फूल-पत्तों से सूनी डाल
शीश धुनती थी सूखी घास

चुभा सहसा पैरों में शूल
याद तब आया कोई फूल
सुरभि से बँधी गुलाबी देह
नयन में मधुर ओस का मेह

शूल को एक बार देखा
    राह का कण्टक तुम्हें लगा
किन्तु जब बार-बार देखा
    फूल से मोहक तुम्हें लगा



देख कर दुख-दर्दों की भीड
    बचाए सुख तुम भागे कहीं
पीर, पर, तुम्हें मिली हर ओर
    सदा ही तुमसे आगे रही

ज़िन्दगी के वन-बीहड बीच
नेह का कमल, घृणा का कीच
समय का अमर, प्रगति का गीत
कोटि नारी-नर-स्वर-सगीत

नर्क को एक बार देखा
    रक्त का सावन तुम्हें लगा
किन्तु जब बार-बार देखा
    स्वर्ग से पावन तुम्हें लगा

शब्द की थी सादी पोशाक
    भाव मे चमत्कार था नहीं
झोपडी में था मन का दीप
    स्वर्ण जैसा सिंगार था नहीं

जा रहा था कोई कवि मौन
व्यंग से तुमने पूछा 'कौन ?
छिड गया गीतकार का तार
तुम्हारा हृदय गया झंकार

गीत को एक बार देखा
व्यर्थ का सपना तुम्हें लगा
किन्तु जब बार-बार देखा
बहुत कुछ अपना तुम्हें लगा



कष्ट भले हम लें, दिशाओं ने हमारी आरती की
सत्य तो यह है, न मंज़िल तय हमारी भारती की
गीतवाले अनुभवों हर माथ पर गहरी शिकन है
रेत—सूनी रेत—प्यासे छन्द का होता निधन है

गर्व की प्रासाद-सीढ़ी पर विगत श्रम रो रहा है



दे चुके कुंकुम जिन्हें हम, मिल रही है धूल उनसे
खिल रहे थे जो सुमन में, नयन हैं उनके करुण-से
शाम की उजली डगर में, चली बनजारिन सुबह की
जा रहे क्षण लाश-जैसी पालकी ले चिर-विरह की

व्यर्थ सन्ध्या दीपकों की, स्नेह जब कम हो रहा है



मूर्ति भी हम है नहीं, मन्दिर-कलश भी हम नहीं हैं
अर्चना के फूल ये फिर भी किसी से कम नहीं हैं
कुछ कठिन है ही नहीं आरोह हर मन का जुड़े यदि
काल-घट का दूध-पानी नापने हंसा उड़े यदि

आज तो मन आँसुओं का मूक आश्रम हो रहा है



४८

मिट्टी से फसलों का सोना देनेवाला देवता
नई अलावें जला रहा है गाँवों की चौपाल में

बूढ़ा नीम बता सकता है कड़वी बात किसान की
लेकिन वह है मौन और आगे भी बोलेगा नहीं
क्योंकि आज धरती से आती ऐसी सोंधी गन्ध है
जिसके कारण कोई दृग में आँसू घोलेगा नहीं

पीपल से पूछोगे तो वह खोलेगा इस राज को
हरदम भोर नहीं छिपती है बादल वाले जाल में



इमली की खट्टी सुधियों में वह जी भरकर रो चुका
अब वह मीठी अमराई में फूँकेगा वह बाँसुरी
जिसका सतक जिसका सरगम सुना नहीं इतिहास ने
आल्हा, कजरी, बिरहा दुहराएँगे उसकी माधुरी

अब वह बना रहा है अपने हाथों अपने स्वर्ग को
चिन्ता बन कर जो बैठा था कल तक उसके भाल में



इसकी मिट्टी में है गर्मी काल की
इसमें ताक़त है उठते भूचाल की
इतिहासों की गाथा इसके मूल में
एक चमकती दुनियाँ इसकी धूल में
इसके पवन-झकोरों में वह प्यास है
सिर्फ बहारों को जिसका आभास है
सजा और सकारे ऐसे है कहाँ
सूरज-चाँद-सितारे ऐसे है कहाँ
श्याम-घटा-बिजली-बरखा मन भावनी
रिमझिम बूंद फुहार चदनियाँ सावनी
आल्हा की हुंकार, रमायन की कथा
वृन्दावन के रास, गोपियों की व्यथा
त्योहारों की धूम, दिवाली के दिये
होली के रंगों-बिन कोई क्या जिये
मनी पुरी के नृत्यों की चचल परी
और भरत नाट्यम पर छिड़ती बाँसुरी
यह सब मेरी दुनियाँ की आवाज है
इस पर ही तो होता मुझको नाज़ है



लो अब गाता हूँ
कोई हँसती-गाती राहों में अगार निछाए ना
पथ की धूल है ये
इससे प्यार मुझको
कोई मेरी खुशहाली पर खूनी आँख उठाए ना
मेरा देश है ये
इससे प्यार मुझको
मेरा देश है ये



झूमर - हँसली - पायल - नूपुर - रागिनी
काजल-मेंहदी-महावर, क्वारी चाँदनी
शुभशकुनो के मगल-कलश दुआर पर
अनब्याहे दृग उठते वन्दनवार पर
और एक दिन जाती घर से लाडली
कुकुम की डोली मे चम्पा की कली
देश कहाँ परदेस कहा, किसकी लगन
किसकी ममता-डोरी, मन किसमे मगन
और एक दिन सपनो की राह पर
जाता है परिवार निरखता आह भर
साध चली श्मशान, उमगो पर कफन
प्यासे मनवा प्यासे ही हो गए दफन
लेकिन इसका अर्थ नहीं होता मरण
मुझको जाना है न किसी की भी शरण

हँसी उड़ाने वाले जाते भूल हैं
मेरे मरघट में भी खिलते फूल हैं
इन पैरों में अभी सफर की प्यास है
इन अधरों पर तो अब भी उल्लास है

लो अब गाता हूँ
कोई मधुऋतु इस पतझर पर दानी हाथ उठाये ना
मेरा बाग है ये
इससे प्यार मुझको
कोई मेरे दुर्दिन को खरीद अहसान दिखाए ना
मेरा देश है ये
इससे प्यार मुझको
मेरा देश है ये



कौन गया है रेखाओं को चीर कर
रांगोली से बनी हुई तसवीर पर
वासन्ती मिलनानिल खुलकर नाचती
राग-भरी-सी 'रूपम'-'गीतम' बाँचती
संस्कृति की पतली डाली है झूमती
नई गुलाबी कली जिसे है चूमती
फूल रहे अँबवा बोझिल अमराइयाँ
मीठी-मीठी पीर-भरी अँगड़ाइयाँ
बरसा में विरही की ममता जागती
टेर-टेर विरहिन को नदिया मांगती

मैं अब गाता हूँ
कोई मोगरिया की डाली गंध में पिहुड़ाए गा
अंगाभार हैं ये,
इनसे प्यार मुझको,
कोई कुल्यान की कश्मीरी शबनम उजड़ाए गा
भीगी आँख हैं ये,
इनसे प्यार मुझको,
मेरा ढंग है ये !



किसी पेड़ को बना नसैनी, तैश में
गंध चली जाती है नभ के देश में
फिर जैसे अम्बर से झरते फूल हैं
भू की स्वप्नांजलि में आते झूल हैं

लगता है, ये आई मीरा बावरी
नर्तित-गुंजित-जीवित राधा साँवरी
और 'सुनो भई साधो'—जुलहा बोलता
दास कबीरा विष में अमृत घोलता
नभ के पर्दे जलते सूरज-दीप से
चले सँदेसे इन्द्रराज के द्वीप से
मेघदूत ज्यों कालिदास के राज के
छिडते मेघमल्हार किसी के साज के
तानसेन-सँग आता बैजूबावरा
सुन जिसको निज सुध-बुध खोदती धरा
'बरसत नयन हमारे'—सूरा झूमता
चित्रकूट के वन म तुलसी घूमता
गीतकार से कहता मैं, तुम भी उठो
झूमो मत पिछली जय मे, आवाज़ दो

लो अब गाता हूँ
कोई मेरे सरगम के पर्दों में आग लगाए ना
मेरा गीत है ये
इससे प्यार मुझको
कोई मरुथल के मरघट म छन्दों को दफनाए ना
भैरव राग है ये
इससे प्यार मुझको
मेरा देश है ये

•

सुख का सपना हो चाहे दुख की बदली
मेरी दुनियाँ गैरों से सौ बार भली

तुम भी सुनते होगे इस सन्देश को
• नई उमँरें हैं मिली पुराने देश को

जाऊँगा अपनी मिट्टी को पूजता
देखूँगा अब नहीं स्वप्न को टूटता

सिर-माथे लेना है धरती-धूल को
जिसने जन्मा है मधुवन में फूल को

लेकिन यह क्या, होती है आवाज़ क्या
धुँआ, आग, चीत्कार, ध्वस, है राज़ क्या

देशों में होती है खाचातान क्यों
शीत-युद्ध से दुनियाँ है हैरान क्यों

मेरे सुख-सपनों पर किसका हाथ है
क्यों पीछे चलती छाया-सी रात है

तोप लगाई है किसने इन्सान पर
क्या एटम गिरना है हिन्दुस्तान पर ?

नहीं, नहीं, मैं नहीं इसे होने दूँगा
मैं अपने सब प्रश्नों का उत्तर लूँगा

लो अब गाता हूँ
कोई मेरी कंगाली पर अपना महल उठाए ना
ये जो झोपडी है,
इससे प्यार मुझको,

मैंने खींची लक्ष्मण-रेखा कोई पाँव बढ़ाए ना
मेरा देश है ये
इससे प्यार मुझको
मेरा देश है ये ....



५०

आवाज आ रही है—
साधना तुम्हारी आज कहाँ से कहाँ आ रही है
पथ भी तुम्ही बनाते हो,
रथ भी तुम्ही चलाते हो,
राह बनाने वाले हो, पथ पूछा नहीं करो
कलम के कारीगरो ! उठो
कलम के महनतकशो ! उठो
कलम के जादूगरो ! उठो
तुम्हे मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के जादूगरो ! उठो

कल तुम क्या थे और आज क्या हो
कल स्रष्टा थे आज लालसा हो
कल तुम रोते थे, जग रोता था
झरना तुममें बेसुध होता था
नभ को जब तुम देते थे वाणी
इन्द्रधनुष करता था अगवानी
छिड़ता था गीतों का इकतारा
और चमक जाता था ध्रुवतारा

याद तुम्हें होगी कोयल की भी
बरखा रानी की पायल की भी
पर्वत जैसे सागर में घुलकर
तब तुम सबसे मिलते थे खुलकर
ऊपर से हर साज़ सँवारे से
अब तुम चलते हो मनमारे से
प्राणों के खेतों पर पाला है
यह सब तुमने क्या कर डाला है

आवाज़ आ रही है—
सर्जना तुम्हारी आज कहाँ से कहाँ जा रही है

तुम सपने के नायक हो,
तुम आँसू के गायक हो,
मोती की क़ीमत पर आँसू तोला नहीं करो
समय की आसावरी सुनो,
नये स्वर की बासुरी बनो,
कबीरा-सी शायरी बुनो,
तुम्हे मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के कारीगरो उठो



आज अजब कुछ हिल्ते-डुल्ते तुम
किसी धर्म-काँटे पर तुल्ते तुम
कुन्दन हो लो जीवन में अपने
कचन तुमको दिखा रहा सपने
ढकी हुई रेशम में रोटी है
सबकी अपनी अलग कसौटी है
यह भी बड़े मज़े की है हलचल
दर्द बटाने आती है मख़मल !

आवृत और अनावृत चोरी में
अब तुम भी जा रहे तिजोरी मे
गिरवीं धरकर गीतों के घर को
क्या संदेश दोगे दुनिया-भर को

क्या ऐसा पासा फेंकोगे तुम
वासन्ती मस्ती बेचोगे तुम
आग लगा केसर की क्यारी में
कब बहार आई फुलवारी में

आवाज़ आ रही है—
कल्पना तुम्हारी आज कहाँ से कहाँ जा रही है
धूप तुम्हारी छाया है,
तुमको सबने गाया है,
जग को कितनी प्यास तुम्हारी, भूला नहा करो
स्वरों की वीणा और कसो,
नयन में मन में और बसो,
मिलेसुखपर कुछऔर हँसो,
तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के कारीगरो, उठो !



वैकुण्ठी ऐरावत के आगे
तुम चारण-सेवक बन कर भागे
विद्यापति तो ढोल रहा रस को
मगर नहा शिवसिंह मिला उसको
चिन्तन का आदर्श सो गया है
बाण भट्ट का हर्ष खो गया है

१०

कालिदास खिलता सरोज सा है
कहाँ पारखी आज भोज-सा है

भूषण है, पर नहीं पालकी है
है तो केवल छत्रसाल की है
क्यो सामन्त उठाए अब डोली
सिर्फ सराहे वह कवि की बोली
इसीलिए वेतन की जाली में
गाली है कवि की कगाली मे
इससे बुरी दशा भी क्या होगी
कवि होता जाता वेतन भोगी

आवाज़ आ रही है—
वन्दना तुम्हारी आज कहो से कहाँ जा रही है
घिरी घटा का कहना क्या,
इस बहाव मे बहना क्या,
कलम उठी तो उठी उसे फिर रोका नहीं करो
किसी तुलसी की तरह जियो,
किसी मीरा की तरह जियो,
किसी सूरा की दृष्टि पियो,
तुम्हे मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के जादूगरो ! उठो



आई परिवर्तन की वेला है
यह समुद्र-मथन की वेला है
अब तो लगता है हर चमन लुटा
सरस्वती का वेणी-सुमन लुटा
मुरझाया है कमल, भग्न वीणा
यह भी कोई जीने में जीना
मण्डप की निर्वसन कौमुदी-सी
आज शारदा लुटी द्रौपदी-सी

पल-पल संघर्षों का चौमासा
चातक फिर भी प्यासा का प्यासा
उससे मिलो कि कुछ तो दरद घटे
उससे कहो कि पथ के शूल हटे
तुम दर्शन-दिग्दर्शन में भूले
अमराई में झूल रहे झूले
कविता है प्रयोग के मरुथल में
या फिर वह गुरुडम के दलदल में

आवाज़ आ रही है—
अर्चना तुम्हारी आज कहाँ से कहाँ जा रही है
अमिय तुम्हीं ने गाया है,
विष का स्वाद बताया है,
इस शराब से बचो, पियो मत, झूमा नहीं करो

सुधा से खाली मेघ भरो,
सुबह के कर में किरन धरो,
किरन के माथे तिलक करो,
तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के जादूगरो! उठो



तुम गाओ तो फिर धरती डोले
रुँधी रही जो कोयलिया, बोले
तुम ब्रह्मा हो, दो नूतन कृतियाँ
रचना की हैं अद्भुत परिणतियाँ
छन्दों का जयदेव निहार उठे
तुम्हें गीत-गोविन्द पुकार उठे
पूजा प्रतिभा और स्वेद की हो
रचना नूतन सामवेद की हो

मिट्टी आए, मगल-घट बन कर
पौधा झूमे, वशी-वट बन कर
लू-लपटों पर ठंडी हवा चले
दुनियाँ करुन राखी बँधा चले
गले मिले भस्मासुर सागर से
शीतल हो बादल की गागर से
गीत छिड़े सदियों का साज़ लिये
नये एशिया की आवाज़ लिये

आवाज़ आ रही है—
प्रेरणा तुम्हारे लिये नया इतिहास ला रही है
तुम्हें मल्हारें गाना है,
दीपक़ नहीं सुनाना है,
चमन समझ ज्वालामुखियों पर डोला नहीं करो
चन्दनी गीत बने फूलो,
फूल पर शबनम बन झूलो,
राह की धूल नहीं भूलो,
तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के कारीगरो, उठो।
कलम के मेहनतक़शो, उठो।
कलम के जादूगरो, उठो।

५१

सस्कृतियो के देश मेरे !
ससृतियो के देश मेरे !
सस्मृतियों के देश मेरे !
ज्योति दो
ज्ञान दो
तम जहाँ हो
छान दो



अब तुम नभ से उतरे भू पर हो,
सामन्तो बाधा से ऊपर हो,
मिलकर मिट्टी के सुख-दुख भोगो,
मेरी धरती के नूतन रोगो!

एक नया ही मोड़ लिया है पथ ने हिन्दुस्तान के
माटी को शक्लें दे देंगे जादूगर निर्माण के

निर्माणों के देश मेरे!
वरदानों के देश मेरे!
तूफानों के देश मेरे!

कुछ कहो,
कुछ सहो,
दूर बैठे—
मत रहो



स्नेह जुड़ा दीपोत्सव मनता है,
बूँद-बूँद से सागर बनता है,
तुम भी सागर मर्यादा वाले,
ज्वार उठाओ मत बाधा वाले,

बूँद-बूँद को, लहर-लहर को, ज्वार-ज्वार को जोड़ दो
मन-मन में हो मोर जहाँ, तुम नाव उधर ही मोड़ दो

खजुराहो के देश मेरे !
उज्जयिनी के देश मेरे !
मृगनयनी के देश मेरे !

फिर उठो,
फिर जुटो,
स्वप्न वाली
आहटो !

•

रामटेक से दूत चला था जो,
मेघों में बन गया किला था जो,
साँची ने जो युग सजोया था,
वह विदिशा के पथ से आया था,

तन का दर्पण, अब का दर्पण दोनों ही हैं सामने
उन्हें देखकर आगत देखो आँखें दी हैं रामने

ओ गालव के देश मेरे !
ओ मालव के देश मेरे !
युग-मानव के देश मेरे !

सुख सजो,
दुख तजो,
विक्रमों के
वशजो !



अभी सफर काफी तय करना है
डगर-डगर की खाई भरना है
हम नक्षत्र बने सूनेपन में
पूरे हों सपने जो हैं मन में

संस्कृति सबकी है, उसमें क्या जाति और क्या प्रान्त रे
नगर-नगर में, गली-गली में, मत हो जाना भ्रान्त रे

कहते है विश्वास मेरे
ये धरती-आकाश मेरे
आएँगे मधुमास मेरे

साथ दो,
हाथ दो,
हर तिमिर को
मात दो।



५२

गूँज-भरे जगल में
धूल-भरे अचल में
रात के अमगल में
मगली सितारा
तीसरा अँगारा
झाँकता दुबारा
टूक-टूक हो न जाय
एशिया हमारा



पूरब की नील-नदी है
तैरो बीसवीं सदी है
पशुओं का शोर किनारे
उनने कुछ शर्त बदी है

उनके सब स्वप्न विकल है
कीचड से मुक्त कमल है

दलदल मे वे पडे हुए
पिछले सपने सडे हुए

मन मे भयभीत मनौती
फिर भी दे रहे चुनौती

स्वीकारो, क्योंकि हमे खुलकर ही बहना है
कमलो के गहनों को नदियो ने पहना है

नदी-नदी मुक्त बहे
लहर-लहर मस्त रहे
बूँद-ज्वाल अम्त रहे
स्वस्थ हो किनारा

—

मज़िली निगाहे
खींच रही बाहे
चीख रहा नीर-भरी
राह की कराहे

आतिशबाजी प्रकाश की
बन बैठी महानाश की
जन्मी बारूद चीन से
भोली साथिन कपास की

सुख के निर्दोष ये दिये
तोपों के काम आ लिये

डाल हिली शुक्ल पक्ष की
संस्कृति के वंश-वृक्ष की

अन्धकार बाँध कर चला
पूरब के द्वार अर्गला

सूरज का दीप न जो जलता आकाश में
बैठे ही रहते हम किरणों की आस में

चम्पा के पाँच पंख
डोल रहे हैं निशंक
पर्वत के अंक-अंक, संगमी निधारा

नयन वेधशाला
देख रही ज्वाला
उपनिवेशवादी का
चम्पई दुशाला

●

राज-योग के दिन बीते
बल-प्रयोग के दिन बीते
कोह्नूर वापिस होगा
भोग-रोग के दिन बीते

फूल खिले जो गमलों में
अन्तर उनमें कमलों में

गुम्बद - महराब - मकबरा
मन्दिर वाली परम्परा

इनको फिरसे ज़रा पढ़ो
शिक्षक हैं मोहन जदड़ो

ठहरो रे ठहरो, ओ सवाहक ध्वन्स के !
अतिम दिन याद करो रावण औ कस के

चीनी-बर्मा हम है,
मिस्री-रूसी हम है,
सैन्धव-वशी हम हे, विश्व हमें प्यारा

खून चले आधी,
नेह-डोर बाधी,
नहीं ज़ार-नीरो हम
बुद्ध और गाधी !



चूनर है आज अनमनी
निर्धन-सी त्रस्त करधनी
जग की हर एक दिशा की
होती दो टूक अर्गनी

आँसू में डूबी-डूबी
खुशियों से ऊबी-ऊबी

दुल्हन का स्वर रुँधा हुआ
शहनाई ने नहीं छुआ

लाठी औ भेस की कथा
सभ्यों के विश्व में वृथा

युग का इतिहास नहीं लौटाए लौटेगा
लोहू का राजमुकुट स्वयम् गला घोटेगा

उठो एशियाइयो !
देश-देश भाइयो !
मुक्ति पर मरो-जियो, समय न कभी हारा

एटमी इरादे
वायुयान लादे
जंगल-कानून चले
ओढ कर लबादे



५३

आज मे आकाश में हूँ



शीश पर बादल घिरे है
और कुछ ऐसे कि जो मेरे पगों में आ गिरे हैं
गीत उनकी वन्दना के गा रहा हूँ
निकट-दर्शन के लिये मैं मेघ-तट पर आ रहा हूँ
किन्तु फिर भी कण्ठ सूखा,
लग रहा यह देश रूखा,
बादलों के देश में या मरुस्थल में ?
मैं कहाँ हूँ ?
लोग जिसको पूछते हैं, पूजते है
व्यर्थ है वह मेघ नगरी—
मै यहाँ भी प्यास में हूँ
आज मै आकाश में हूँ



मै विमानों के हवाई झूलनो में झूलता हूँ
बादलो से उठ, जरा ऊपर,
पहाडी चोटियों पर झूम कर,
उस भूमि को ही भूलता हूँ—
गीत का स्वर जिस जगह से अभी मद्धिम आ रहा है
प्रीति का स्वर ऑख के हर स्वप्न को ललचा रहा है
इस परी के लोक में भी
मै उसी की आस में हूँ
आज मै आकाश में हूँ



क्या नहीं यह सच कि मै इस
प्रयोगी नभ के त्रिशंकु-सुमात्रा में
यान की इस भीडवाली यात्रा में
मूर्तवत हूँ, किसी सुन्दर-असुन्दर के पास बैठा
दृष्टि करती आरती है
और यह सम्मान मन्दिर में यहॉ के कम नहीं है–
मै इसी विश्वास मे हूँ
आज मै आकाश में हूँ



घटा उतनी है नहा सुन्दर कि जितना सोचता था
किन्तु फिर भी खाचती है ही मुझे वह
देख कर उज्ज्वल कपासी पाटलों से बादलो को

(जो सदा से सिर फिरे है
और सिर से पाँव तक आकर घिरे है)
गुनगुनाने लग गया हूँ प्रेरणाएँ
और ये सह-यात्री कुछ सुन न पाते गीत-गुजन
यान के इस शोर गुल मे
यान के बाहर घटाओ को पता क्या
मै उन्हा की कल्पना मे
व्यस्त हूँ, सगीत-मय हूँ
दूर बाहर हों भले वे
किन्तु वे मस्तिष्क में मन मे कि मेरे पास है
मैं भी उन्हा के पास मे हूँ
आज मै आकाश में हूँ



मेघ का आकाश ऊपर और नीचे
सृष्टि सब अदृश्य ही है
देख मैं पाता नहीं कुछ
फेंक मै पाता नहा मन
उन सलौनी घाटियो पर पर्वतो पर
शिखर जिनके मन्दिरों के गुम्बदों-से
खेत जिनकी सीढ़ियों से
जहाँ पर्वतराज ने उठकर युगो से
बाँध डाले है प्रभजन

११
आज उनको देवलोकी व्योम मे क्यो
देख भी पाता नहीं मन
सोचता हूँ, भूमिका है
मै अभी अभ्यास में हूँ
आज मै आकाश में हूँ



अभी थोडी देर पहले क्या समा था
खेत-पतों के सलौने वस्त्र पहने
गिरि-शिखर-माला खड़ी थी
चीड-वन था मुग्ध, सयत
और मन में उठ रहे तूफान-सा मजमा जमा था
सोचता था, मैं बहुत उल्लास में हूँ
आज मै आकाश मे हूँ



यह हवाई यान पछी की तरह है
फडफडाते पख,
पछी भर रहा ऊँची उडानें
यह समय से खेलता हर बार
उडने के बहाने
हस यह ऊँचाइयो-गहराइयो के बीच उडता

वह माली है, वह खुशबू है, हम चमन
वह मूरत है, वह मन्दिर है, हम नमन
छाया है माथे पर आशीर्वाद-सा
वह संस्कृतियों के मीठे संवाद-सा

उसकी दहरी अपना माथा टेक कर
हम उन्नत होते हैं उसको देखकर
ऋतुओ ! उसको नित नूतन परिधान दो
झुलस रही है धरती, सावन दान दो
सरल नहीं परिवर्तन में मन ढालना
हर पत्थर से भागीरथी निकालना

जिस मन्दिर-मसजिद-गिरजे में कैद पडा इन्सान हो
जाओ उसमें किरन ! किवारा खोल दो
कुंकुम-पत्रो ! भारत की जय बोल दो



उसको करो प्रणाम, दृगों में नीर है
झेलम की आँखो वाला कश्मीर है
बजरे और शिकारे उसकी झील के
लगते बनजारे तारे कन्दील-से

किसी नारियल-वन की गेय सुगन्ध से
अन्तरीप के दूरागत मकरन्द से
फूटा करता नये गीत का अन्तरा
कुछ क्षण को दुख भूल, विहँसती है धरा

५५

कौन स्वीकारे भरी अंजलि नयन की
आज के कुछ, कुछ विगत के आँसुओं से

दो छवि-कमलो के अन्तर-आवास में
कोई बादल घुमड रहा आकाश में

सर्जन की मगल-वेला में धूमकेतु क्या चाहता
बच्चो की पावन उत्सुकता तोल दो
देशज मित्रो ! भारत की जय बोल दो



हम अनेकता में भी तो है एक ही
हर झगडे में जीता सदा विवेक ही
कृति, आकृति, सस्कृति भाषा के वास्ते
बने हुए है मिलते-जुलते रास्ते

आस्थाओ की टकराहट से लाभ क्या
मज़िल को हम देंगे भला जवाब क्या
हम टूटे तो टूटेगा यह देश भी
मैला होगा वैचारिक परिवेश भी
सर्जन-रत हो आज़ादी के दिन जियो
श्रम-कर्माओ, रचनाकारो, साथियो !

शान्ति और सस्कृति की ओ बहती स्वाधीना जाह्नवी
कोई रोके, बलिदानी रँग घोल दो
रक्त-चरित्रो ! भारत की जय बोल दो



५५

कौन स्वीकारे भरी अंजलि नयन की
आज के कुछ, कुछ विगत के आँसुओं से

दूर वेदी पर महादेवी प्रतिष्ठित
पुण्य-सलिला, गीत की भागीरथी
श्रेष्ठ पूजन के नियंत्रक हाथ जोड़े
घेर कर कहते कि 'हम ही हैं व्रती'

क्यों मुझे ही रोकते प्रहरी उन्हीं के
पूछता मैं मौन व्रत के आँसुओं से



मान-मन्दिर मूर्ति का है, चारणों का
किन्तु है अपमान-मन्दिर वह मुझे
द्वार पर जो रोकता सावन-बहारें
एक रेगिस्तान मन्दिर वह मुझे

मूर्ति-पूजन के नियन्ताओ ! निहारो
रक्त गिरता है शपथ के आँसुओं से



पूजनीयों को भले पूजक नया हूँ
प्यार प्रतिमा का मुझे भी तो मिले
वर्ग-भेदों में नहीं सीमित रहा जो
दान गरिमा का मुझे भी तो मिले

कह रहा है द्वार का हर एक हरिजन
मच पर होते स्वगत के आँसुओं से

नींद के कारीगरों ने रूप शिल्पा
टिमटिमाती-रात की दीवार पर
आ गए जनभोर के शिल्पी वहाँ तो
व्यंग करने लग गए अंधियार पर

तर-बतर है सीढ़ियाँ हीरक-महल की
भीड़-बोझिल राज-पथ के आँसुओं से



५६

बोल, बोल, बोल, अरी बेला ! तू है कहाँ
श्रमजा सी स्वेदमयी
और सामवेद मयी
कागज की राह-चली लेखनी पुकारती
बोल, बोल, बोल, अरी बेला तू है कहाँ

शब्दो का, छन्दो का, भावो का हर भ्रमर
गाता है गीत किन्हीं गन्धो के राग मे
दूर किसी बगिया मे खिलने से लाभ क्या
बेला के फूल खिले कविता के बाग में

बोल, बोल, बोल अरी बेला तू है कहाँ



भोर-साँझ को निहारती हुई समुद्र-जा
एक बेशक़ीमती लहर मुझे उधार दे
एक छटा ज्वारो की मै भी तो देख लूँ
एक घटा सावन की रचना पर वार दे

बोल, बोल, बोल अरी बेला तू है कहाँ



गीतो की व्यक्ति और रागो की मीड-सी
तारो की तीर्थवती बेला को है नमन
पावन उस ममता का स्नेह पात्र है कहाँ
स्वेद-रक्त-अश्रु किस कटोरे मे लें शरण

बोल, बोल, बोल अरी बेला तू है कहाँ



जो है मन का धनी
जिसकी है लेखनी

उसकी ही वेला है, युग है, है भारती
कागज़ की राह चली लेखनी पुकारती
सगम को व्यग्र कलम, वेला तू है कहाँ
बोल, बोल, बोल परी वेला तू है कहाँ



५७

मंजिल के मन्दिर में पूजा के थाल-सा
पूरन है गीत पर अपूरन है आरती

आँसू के फूल और मुट्ठी भर धूल है
ये ही बस कुंकुम है, ये ही है अर्चना
पावन है, उजली है कपूरी सर्जना
भूलों से बोझिल ये नयनों का कूल है
देगा वरदान अभी शायद ही देवता
मन मेरा फूला है, नैया के पाल-सा
धड़कन की बनजारिन, हिम्मत ना हारती

•

सुख का जो कर्ज लिया, कुछ दिन के वास्ते
बढ़ जाए ब्याज नहीं अब तक के मूल से
भूलों को कब तक है दुहराना भूल से
अँधियारा घेरे है उजियारे रास्ते
देगा वरदान अभी शायद ही देवता
पथ ये जो सीधा है घाटी के ढाल-सा
रथ अपना थम-थम कर ले जाना सारथी !

•

गूँज रही बेला-सी मेरी ये लेखनी
सरगम जो सोए है इससे ही जाग लें
आँखों से समिधाएँ, साँसों से आग लें
गहरी अँधियारी है, आगे भी देखनी
देगा वरदान अभी शायद ही देवता
जिसका माथा ऊँचा सूरज के भाल सा
उसको ही राज तिलक करती है भारती

•

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०	८	तुमइ तना	तुम इतना
४९	३	मुझे	मगर
९१	१	भींग	भीग
१०९	१६	सुने	सुनें
१४६	१०	खोदती	खो देती
१६३	२	बैठो	बैठी
१६८	११	पास	पाश

